RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जुलाई 2025
अंक 466 जुलाई 2025

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

मूल्य ₹50

उस्ताद मंसूर

मिनिएचर पेंटिंग के चित्रकार

उस्ताद मंसूर मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार के मशहूर मिनिएचर पेंटर थे। उन्हें मुख्य तौर पर प्रकृति के चित्रकार के रूप में जाना जाता है। उनकी पेंटिंग्स की सबसे खास बात थी प्रकृति की गहरी समझ और बारीक विवरण। उन्हें पक्षियों, फूलों, जानवरों और पौधों को चित्रित करने में महारत हासिल थी। उनकी कलाकृतियाँ इतनी जीवन्त होती थीं कि देखने वाले दंग रह जाते थे। उनके बनाए जानवरों की खाल, पेड़ों की छाल, पक्षियों के पंख आदि इतनी बारीकी से बने होते थे कि वे एकदम असली जैसे लगते थे। ऐसा लगता ही नहीं था कि वे चित्र हैं।

मुगल बादशाहों ने कला और संस्कृति को बहुत महत्व दिया था। इसी दौर में उस्ताद मंसूर ने प्राकृतिक विषयों को अद्भुत बारीकी से चित्रित करके मिनिएचर कला को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। वे मुगल शाही संग्रहालयों के लिए दुर्लभ और अनोखे जीव-जन्तुओं की पेंटिंग बनाते थे।

उस्ताद मंसूर की कुछ प्रसिद्ध पेंटिंग्स हैं – 'मोर', 'नीलकंठ पक्षी', 'साइबेरियन क्रेन', 'टर्की मुर्गी' और कई अन्य जंगली जानवरों की चित्रकारी। उनकी पेंटिंग्स न केवल कला का अद्भुत उदाहरण हैं, बल्कि विज्ञान और प्रकृति के अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

यह पेंटिंग उस्ताद मंसूर द्वारा लगभग 1625 के आसपास बनाई गई मानी जाती है। इसमें दिखाया गया डोडो पक्षी (बीच में) अब विलुप्त हो चुका है। यह पेंटिंग इसलिए भी बेहद खास मानी जाती है क्योंकि यह जीवित डोडो पक्षी का शायद सबसे सटीक चित्रण है। अँग्रेज़ व्यापारी और यात्री पीटर मंडी के अनुसार, 1600 के दशक में दो जीवित डोडो पक्षी भारत लाए गए थे। इस पेंटिंग में दिखाया गया डोडो पक्षी शायद उन्हीं में से एक पर आधारित हो। इस चित्र में दिखाए गए अन्य पक्षी हैं: रेड-ब्रेस्टेड लॉरिकीट (ऊपर बाईं ओर), ट्रैगोपान (ऊपर दाईं ओर), बार-हेडेड गीज़ (नीचे बाईं ओर) और पेंटेड सैंडग्रोस/पेंटेड भटतीतर (नीचे दाईं ओर)।

इस बार

अंक 466 • जुलाई 2025

चकमक

उस्ताद मंसूर	2
लाल दुपट्टा - नेहा बहुगुणा	4
तुम भी बनाओ - अपनी बाड़ी - वैष्णवी लोकेश और आइशा कावलकर	8
ज़हर का तोड़ - पीयूष सेकसरिया	10
रंगोली - शुभम लखेरा	14
किताबें कुछ कहती हैं	19
चित्रपहेली	20
बरसै बदरिया सावन की - मीराबाई	22
क्यों-क्यों	24
ननकी और चोरू की दुनिया - लॉरेंस हूग	28
मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 13 - आर एस रेश्मू राज, ए पी माधवन व साथी	32
माथापच्ची	34
मेरा पन्ना	36
तुम भी जानो	43
चलती हुई पहाड़ी है - प्रभात	44

आवरण चित्र: उस्ताद मंसूर

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

लाल दुपट्टा

नेहा बहुगुणा
चित्र: प्रशान्त सोनी

गुरु को सब मस्तमौला कहते थे। उसे बस अपने काम से मतलब होता और अपनी पढ़ाई-लिखाई से। गणित और कला दोनों ही उसके पसन्दीदा विषय थे। जब कोई काम नहीं होता तो वो घर के बाहर पेड़ों को देखा करता या फिर घर में आए किसी नए सामान की जाँच-पड़ताल में लगा रहता।

वो आठवीं में पढ़ता था। दोस्त के नाम पर बस एक पड़ोसी अज्जू ही था जो स्कूल आने-जाने में उसके साथ रहता। बाकी तो गुरु खुद ही खुद का बेस्ट फ्रेंड था। उसे स्कूल के कार्यक्रमों में भी कोई दिलचस्पी नहीं थी क्यूँकि हर कार्यक्रम में कई बच्चे एक साथ ही भाग लेते। और गुरु, वो तो अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करता था।

साल के आखिरी कुछ महीनों में वार्षिकोत्सव की तैयारी शुरू हो गईं। चूँकि नौवीं और दसवीं के बच्चे बोर्ड की तैयारी में लगे होते, इसलिए स्कूल में ये नियम निकाला गया कि आठवीं का हर बच्चा किसी न किसी कार्यक्रम में भाग लेगा। क्यूँकि आगे के सालों में तो बस पढ़ाई ही करनी होगी।

गुरु डांस वगैरह से तो कोसों दूर रहता। लेकिन इस बार टीचर के सामने उसकी एक न चली। तो मन मारकर उसने एक नाटक में भाग लेने के लिए हाँ कर दी। और हाँ भी इसलिए की कि नाटक में उसका बस एक ही डायलॉग था। दरअसल अज्जू उस नाटक में राजा का रोल कर रहा था। और इसीलिए गुरु दरबान के रोल के लिए मान गया।

पूरे नाटक में उसे स्टेज के एक किनारे खड़ा रहना था और बस एक बार "जी महाराज" बोलना था। "ये तो ज़्यादा मुश्किल नहीं है।" गुरु ने सोचा, 'इतना तो हो ही जाएगा।"

नाटक की रीहर्सल शुरू हो गई। जहाँ बाकी बच्चे अपनी आवाज़ और एक्टिंग पर ध्यान दे रहे थे, वहीं सारी रीहर्सल के दौरान गुरु बस टाँग पे टाँग रखकर कोने में बैठा रहता और वहीं से "जी महाराज" कह देता।

नाटक के एक दिन पहले सब बच्चों को अपनी-अपनी कॉस्ट्यूम में तैयारी करनी थी। दीवाली का कुर्ता-पायजामा तो गुरु के पास था, मगर पगड़ी नहीं थी। माँ ने उसे कहा कि अज्जू की दीदी सेमल से लाल दुपट्टा माँग ले। उसी की पगड़ी बँधवा लेना।

सेमल नौवीं में पढ़ती थी। वह अज्जू और गुरु से बस एक ही साल बड़ी थी। लेकिन वह अज्जू के मुकाबले कहीं ज़्यादा शालीन और समझदार लगती।

गुरु शाम को ही अज्जू के घर गया और आवाज़ लगाई, "अज्जू! अज्जू!"

मगर सेमल बाहर आई। ये पहली बार था जब गुरु, सेमल से अकेले बात कर रहा था। वैसे वो मोहल्ले के किसी भी बच्चे से बात नहीं करता था। और कुछेक सालों से लड़कियाँ तो उसे बहुत ही अलग तरह की लगती थीं।

"वो खेलने गया है। क्या हुआ?" सेमल ने पूछा तो गुरु नीचे देखते हुए बोला, "तुम्हारे पास लाल दुपट्टा है? मुझे पगड़ी के लिए चाहिए।"

"हाँ! आ जाओ ऊपर कमरे में। दो-तीन लाल दुपट्टे हैं। पसन्द कर लेना।" कहकर

सेमल अपने कमरे की ओर चल दी। गुरु भी पीछे-पीछे हो लिया।

उसने देखा कि सेमल ने अपनी अलमारी खोली और हैंगर हटाकर दुपट्टा ढूँढने लगी। फिर उसने सररर्र-से एक दुपट्टा खींचा और कुर्सी पर डाल दिया। ऐसे ही दूसरा और फिर तीसरा। फिर सेमल ने सबसे लाल वाला दुपट्टा उठाकर अपने चारों ओर लपेटा और गुरु से पूछा, "ये कैसा है?"

गुरु को थोड़ा अजीब-सा लेकिन अच्छा लग रहा था। वो मुस्कराया और सर हिलाकर बोला, "हाँ, ये ठीक है।" उसने पहली बार नोटिस किया कि एक रंग पहनने से कैसे किसी की शक्ल अलग दिखने लगती है। अच्छी लगने लगती है।

फिर सेमल उसके पास आकर उसके सर पे पगड़ी बाँधने लगी। गुरु को पहले तो अजीब-सा लगा। लेकिन अचानक एक खुशबू आई।

"अहा! कितनी अच्छी खुशबू है।" गुरु ने दुपट्टे को नाक से लगाकर कहा।

"हाँ-हाँ, वो गुलाब फ्लेवर के डिटर्जेंट से धोया है ना मम्मी ने" कहकर सेमल हँसने लगी। सेमल ने कई तरह से पगड़ी बाँधने की कोशिश की, मगर हर बार कुछ और ही हो जाता। और दोनों हँसने लगते।

पहली बार गुरु को किसी के साथ खेलने में इतना मज़ा आ रहा था। वो भी दुपट्टे के साथ। "सेमल इतनी भी सीरियस नहीं है।" वो सोचने लगा, "अगर वह मेरी क्लास में होती तो मैं अज्जू को नहीं उसे ही दोस्त बनाता।"

इसके बाद गुरु गुलाब फ्लेवर का दुपट्टा लेकर मुस्कराते हुए घर चला गया। पहुँचते ही उसने मम्मी के ड्रेसिंग टेबल के सामने झट-से दुपट्टा खोला और फर्र-से हवा में उड़ाकर वैसे ही पहनने लगा जैसे सेमल ने पहना था। फिर खुद ही हँसने लगा।

मम्मी ने चुपके-से देखा और हँसने लगीं। फिर अन्दर आते हुए बोलीं, "क्यों, दरबान से रानी का रोल मिल गया क्या?"

गुरु हड़बड़ा गया और दुपट्टे से निकलने के चक्कर में लड़खड़ाकर गिर गया।

मम्मी ज़ोर-से हँसने लगीं और बोलीं, "ये दरबान तो पहरेदारी के पहले ही घायल हो गया।"

गुरु का चेहरा लाल हो गया। कान के पास गरम-गरम लगने लगा। गुरु ने सोचा कि वो क्यों शरमा रहा है। मम्मी ही तो हैं।

लेकिन उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

नाटक वाले दिन टीचर ने अच्छे-से गुरु की पगड़ी बाँध दी और काजल से मूँछें भी बना डालीं। हाथ में बड़ी-सी लाठी पकड़कर अब वो सच में दरबान लगने लगा था। गुरु को लगा कि ये तो मैं अच्छा लग रहा हूँ। क्यों ख्वाहमख्वाह नाटक से दूर रहा इतने साल!

जब उसके नाटक की बारी आई तो गुरु सीधे जाकर स्टेज के एक कोने पर तनकर खड़ा हो गया। आज जैसे उसके अन्दर कोई और ही घुस बैठा था।

पर्दा खुला और गुरु ने देखा कि मम्मी पीछे बाकी पेरेंट्स के साथ बैठकर तालियाँ बजा रही हैं। फिर अचानक उसकी नज़र आगे गई। कोई हाथ हिला रहा था।

"अरे! सेमल।" गुरु के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान तैर गई।

सेमल ने अँगूठा उठाकर गुरु को "ऑल द बेस्ट" कहा। अब गुरु अपने रोल में बहुत अच्छे-से घुस जाना चाहता था। उसे लग रहा था कि सेमल के लिए उसे अच्छे-से प्रदर्शन करना है।

नाटक आगे बढ़ा। गुरु अकड़कर खड़ा रहा। बीच-बीच में वह सेमल को देखता और उसकी नज़र पड़ते ही नज़र चुरा लेता। अब मौका आया गुरु के डायलॉग का।

अज्जू ने आदेश दिया, "दरबान, उसे अन्दर ले आओ।"

गुरु के पेट में अचानक जैसे हज़ारों तितलियाँ उमड़ने लगीं। उसने सेमल की ओर देखा तो वो इशारे करके उसे बोलने को कह रही थी। गुरु हड़बड़ा गया और "जी महाराज" की जगह ज़ोर-से बोला "जी महाकाल"।

अज्जू और बाकी बच्चों की हँसी छूट गई। कुछेक दर्शक भी हँसने लगे। सेमल भी हँस रही थी। उसे देखकर गुरु के चेहरे पर भी मुस्कान आ गई और नाटक के मुताबिक अपना डायलॉग "जी महाराज" बोलकर वह एक-एक कदम बाईं ओर सरककर स्टेज से निकल गया।

नाटक खतम हुआ। गुरु घर आया तो बहुत थक चुका था। मम्मी ने उसे शाबाशी दी क्यूँकि पहली बार उसने किसी कार्यक्रम में भाग लिया था, वो भी खुश होकर। "भई, स्टेज पे खड़े होना कोई आसान काम थोड़े ही है, शाबाश बेटा।" माँ ने कहा। लेकिन गुरु तो जैसे अलग ही दुनिया में खोया हुआ था।

उसने वो लाल दुपट्टा निकाला और उसे मुँह पर रखकर न जाने कब सो गया। रात को नींद खुली तो दुपट्टा गायब था। गुरु दौड़कर मम्मी के पास गया।

"मम्मी, वो सेमल का दुपट्टा?"

"वो ले गई धोने। जा मुँह-हाथ धो ले। मैं खाना लगा देती हूँ।"

गुरु को पता नहीं क्यों दुपट्टे की खुशबू याद आने लगी। लेकिन ये भी लग रहा था कि आखिर

क्यों उसे सेमल से बात करके अच्छा लगा – लड़कियाँ तो अजीब होती हैं, फिर अच्छा क्यों लगा?

अगले दिन छुट्टी थी। इसलिए गुरु आराम से उठा। मम्मी ने उसे दूध का गिलास और एक रोटी पकड़ा दी। बिना ब्रश किए ही वो छत पर चला गया – धूप में नाश्ता करने और रोटी के टुकड़े कौओं को खिलाने के लिए।

उसने झट-से दूध पिया और रोटी को टुकड़े कर छत में यहाँ-वहाँ फेंकने लगा। कौए उसकी छत पर थे। और वो अनायास ही बार-बार सेमल के घर की ओर देख रहा था। फिर उसे आँगन में वही लाल दुपट्टा दिखाई दिया। रस्सी पे लटका, धूप में सूखता, फर्र-फर्र उड़ता हुआ।

एक बार फिर गुरु को पेट में वही अजीब-सी तितलियाँ महसूस होने लगीं और चेहरे पर मुस्कान आ गई।

बच्चों द्वारा की गई औषधीय बाड़ी की प्लानिंग।

अपनी बाड़ी

लेख व फोटो: वैष्णवी लोकेश और आइशा कावलकर

अक्सर छोटी-मोटी बीमारियों के इलाज के लिए हम पेड़-पौधों से मिलने वाली औषधियों का उपयोग करते हैं। जैसे सर्दी-खाँसी के लिए शहद के साथ अदरक या तुलसी, मुँह के छालों के लिए पत्थरचट्टा वगैरह। लेकिन आजकल ऐसे पौधे कम होते जा रहे हैं और इनके बारे में हमें जो पता है, वह ज्ञान भी! तो हमने सोचा क्यों ना कुछ औषधीय पौधे हम अपने घर या स्कूल के आसपास लगाएँ।

चलो, देखते हैं कि हमने दोस्तों के साथ मिलकर अपनी औषधीय बाड़ी कैसे बनाई।

सबसे पहले हमने बाड़ी के लिए ऐसी जगह चुनी जहाँ हम पौधों की देखभाल के लिए आसानी से आ-जा सकें और जहाँ पानी की व्यवस्था भी हो। हमने अपनी बाड़ी स्कूल में ही एक छोटी जगह पर बनाई।

फिर हमने लगाए जाने वाले पौधों की सूची बनाई। इसके लिए हमने अपने दोस्तों और बड़े-बुज़ुर्गों से बातचीत की और ऐसे पौधे चुने–

- जो आसपास अब कम दिखने लगे हैं।
- जिनसे कई तरह की दवाएँ बनती हैं।
- और कुछ ऐसे भी जो खाने में स्वादिष्ट और पौष्टिक हों।

ज़मीन तैयार करते बच्चे।

फिर हमने मिट्टी तैयार करी। इसके लिए हमने–

- निशान लगाए कि बाड़ी कहाँ से कहाँ तक होगी और मिट्टी में अच्छे-से पानी डाला।
- फिर हल्की-सी जुताई करी ताकि मिट्टी की ऊपर-नीचे की परतें आपस में अच्छे-से मिल जाएँ।
- फिर उसमें गोबर या जैविक खाद मिलाई। इससे पौधे अच्छे-से पनपेंगे।
- अगले दिन फिर से ज़मीन को नरम किया और प्लान बनाया कि कौन-से पेड़-पौधे कहाँ लगेंगे।

फिर हमने इकट्ठा करे बीज, तने, पत्तियाँ या कलम, जो भी मिल सके! उन्हें मिट्टी में लगाया, पानी डाला और मिलकर तय किया कि किस दिन कौन पानी देगा और देखभाल करेगा।

बाड़ी सुरक्षित भी तो होनी चाहिए! इसलिए हमने उसके लिए बागड़ तैयार की। इसे हमने कुछ लकड़ियों और काँटों वाले पौधों को आपस में जोड़कर तैयार किया।

हमने इसमें अन्दर-बाहर जाने के लिए एक छोटा-सा गेट भी बनाया।

तुम भी अपने दोस्तों या परिवार वालों व शिक्षकों के साथ मिलकर अपने घर या स्कूल में इस तरह की बाड़ी तैयार कर सकते हो। तुम अपनी बाड़ी का गेट कैसा बनाओगे – रंग-बिरंगा, पत्तों से सजा हुआ या लकड़ी से बना हुआ? अपनी बनाई बाड़ी की फोटो हमें ज़रूर भेजना।

बीज, कलम जमा करते और उन्हें लगाते हुए।

बागड़ (fencing) बनाते हुए।

गेट, बागड़ और बैनर के साथ बन गई बाड़ी।

'बिग फोर' में शामिल रसैल वाइपर ज़हरीला होता है।
फोटो: विवेक शर्मा/
Indiansnakes.org

ज़हर का तोड़

साँप का काटना, बचाव और इलाज!

पीयूष सेकसरिया

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

'बिग फोर' में शामिल स्पेक्टेल्ड कोबरा (नाग)। अपने फन की वजह से यह सबसे आसानी से पहचाने जाने वाली किस्मों में से एक है।
फोटो: राहुल अल्वारेज़

वो सर्दियों की देर शाम थी। मैं इन्दौर से थोड़ी ही दूरी पर स्थित एक एनजीओ सेंटर में था। मैं प्रणय के साथ उसके कमरे में ठहरा हुआ था। हमने तय किया कि हम कैम्पस के बाहर की पक्की सड़क पर चलेंगे और लगभग 1 किलोमीटर दूर गाँव तक जाएँगे। प्रणय इस इलाके को अच्छी तरह से जानता था। हम चप्पल पहनकर निकले और कैम्पस की बाड़ तक गए। घोर अँधेरा था। मैंने प्रणय से वहीं इन्तज़ार करने को कहा और वापस कमरे में चला गया। पता नहीं क्यों, मुझे लगा कि मुझे जूते पहनने चाहिए और टॉर्च साथ ले जानी चाहिए। इसमें मुझे एक मिनट से ज़्यादा नहीं लगा। मैंने टॉर्च जलाई और हम आराम से चलने लगे। हम बतियाते हुए चल रहे थे। अभी 5 मिनट भी नहीं हुए थे कि अचानक हमने टॉर्च की रोशनी में तेज़ रफ्तार से रेंगते हुए एक साँप को देखा। वह हमारा रास्ता काटते हुए गया, वो भी महज़ एक कदम की दूरी पर। टॉर्च की रोशनी ने हमें उस पर पैर रखने और उसके काटने की प्रबल सम्भावना से बचा लिया था।

साँप विषमतापी (cold blooded) होते हैं। और खास तौर पर सर्दियों की रातों में वे अक्सर पक्की सड़कों जैसी सतहों पर आ जाते हैं क्योंकि वे गर्म होती हैं। इस मामले में, रोशनी की बदौलत मैं पहचान पाया कि वह साँप चेकर्ड कीलबैक था, जो कि ज़हरीला नहीं होता है। लेकिन उसकी जगह कोई ज़हरीला साँप भी हो सकता था। और अगर उसने मुझे काटा होता, तो मैं पक्के में घबरा जाता। टॉर्च और बन्द जूतों ने मुझे बचा लिया।

तुम्हें शायद यह जानकर हैरानी हो कि भारत में हर साल 58,000 से ज़्यादा मौतें साँप के काटने से होती हैं। यह दुनिया भर में साँप के काटने से होने वाली मौतों का लगभग 80% है। अनुमान लगाया गया है कि इनमें से लगभग 90% मौतें तो मुख्यत: चार विषैले साँपों के कारण होती हैं, जिन्हें 'बिग फोर' (Big four) कहा जाता है। 'बिग फोर' में शामिल हैं – कॉमन क्रेट (करैत), स्पेक्टेल्ड कोबरा (नाग), रसेल वाइपर (मनियार) और सॉ-स्केल्ड वाइपर (अफाई)। इनमें से ज़्यादातर मौतें ग्रामीण इलाकों में घर पर हुईं। लगभग आधे लोगों की मौत जून और सितम्बर के बीच बारिश के मौसम में हुईं और ज़्यादातर लोगों को साँप ने पैरों में काटा। पीड़ितों में से 25% लोग 15 साल से कम उम्र के बच्चे होते हैं और शरीर के छोटे होने के कारण बच्चों पर ज़हरीले साँपों के काटने का ज़्यादा गम्भीर असर होता है।

सॉ-स्केल्ड वाइपर एक ज़हरीला साँप है। यह अपने शल्कों (scales) को रगड़कर आरी जैसी घरघराहट की आवाज़ निकालता है, जो चेतावनी का संकेत होती है।
फोटो: विवेक शर्मा
Indiansnakes.org

कॉमन क्रेट बहुत ज़हरीला होता है और रात में सक्रिय होता है।
फोटो: डेविड वी राजू

ज़हर का तोड़ एंटीवेनम

साँप का ज़हर (venom) एक जटिल मिश्रण होता है। इसका मुख्य काम है पक्षियों और कुतरने वाले जीवों (चूहे-गिलहरी-खरगोश का परिवार) जैसे शिकारों को मारना, उन्हें अक्षम करना और पंगु बनाना। साँप आत्मरक्षा में काटते हैं और इन्सानों को काटना इसी श्रेणी में आता है। ज़हरीले साँप के काटने पर हम अपने अंग खो सकते हैं, लकवा हो सकता है और बहुत दर्दनाक मौत भी हो सकती है। आज भी साँप के काटने के शिकार हुए बहुत-से लोग 'बाबा' के पास जाते हैं। उनके खतरनाक उपचार कभी-कभी सिर्फ इसलिए काम कर जाते हैं क्योंकि साँप ज़हरीला नहीं था या उसका दंश सूखा था, यानी कि काटते समय उसने ज़हर नहीं छोड़ा था। सौभाग्य से आज हमारे पास इसका काफी विश्वसनीय इलाज उपलब्ध है।

1895 में फ्रांसीसी वैज्ञानिक अल्बर्ट कैलमेट ने 'नाजा नाजा' (नाग/स्पेक्टेकल्ड कोबरा) के ज़हर से साँप का पहला एंटीवेनम बनाना शुरू किया। यह काम उन्होंने फ्रांस के लिली शहर में स्थित पाश्चर इंस्टीट्यूट में किया था। एंटीवेनम बनाने के लिए घोड़े या भेड़ में ज़हर की थोड़ी मात्रा इंजेक्ट की जाती है। इससे उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली प्रतिक्रिया करती है और उनके शरीर में ज़हर का विरोध करने वाले एंटीबॉडी बनते हैं। एक निश्चित समय अन्तराल पर उस जानवर का खून लिया जाता है। और उसमें से ज़हर को बेअसर करने वाले एंटीबॉडी को शुद्ध करके एंटीवेनम तैयार किया जाता है। यह एंटीवेनम ज़हरीले साँप के काटने के इलाज के रूप में उपयोग किया जाता है।

एंटीवेनम दो प्रकार के होते हैं, मोनोवेलेंट और पॉलीवेलेंट। भारत में हम पॉलीवेलेंट एंटीवेनम का उपयोग करते हैं। यह 'बिग फोर' यानी सॉ-स्केल्ड वाइपर, रसेल वाइपर, स्पेक्टेल्ड कोबरा, कॉमन क्रेट के काटने के इलाज में प्रभावी है। किसी व्यक्ति को कितनी मात्रा में एंटीवेनम देना होगा

फोटो: माइक प्रिंस CC by 2.0

फोटो: शंकर एस

भारत में एंटीवेनम बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाले ज़हर का लगभग 80% हिस्सा इरुला लोगों द्वारा निकाला जाता है।

यह ज़हर की मात्रा, उसकी विषाक्तता और पीड़ित के उम्र के आधार तय होता है। कई बार ज़हर को पर्याप्त रूप से बेअसर करने के लिए एंटीवेनम के कई इंजेक्शन देने की ज़रूरत पड़ सकती है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि एंटीवेनम उपचार जल्द से जल्द शुरू हो जाए।

शायद तुम सोच रहे होगे कि घोड़ों को इंजेक्शन लगाने के लिए ये सारा साँप का ज़हर आता कहाँ से है। इसका जवाब है इरुला जनजाति के साँप पकड़ने वाले विशेषज्ञ लोग। इनकी 'इरुला स्नेक कोऑपरेटिव सोसाइटी' तमिलनाडु के दो स्थानों से सारे देश के लिए ज़हर इकट्ठा करती है। इरुला 'बिग फोर' साँपों को पकड़ते हैं, उन्हें मिट्टी के बर्तनों में रखते हैं और ज़हर निकालकर उन्हें वापस जंगल में छोड़ देते हैं।

एक दुखद हादसा

हाल ही में मेरे एक युवा मित्र की साँप के काटने से मौत हो गई। वह दिल्ली के पास फरीदाबाद के एक गाँव में रहता था। बारिश का मौसम था। वह बाहर खाट पर सो रहा था। आधी रात को उसे भयानक दर्द हुआ। उसने अपनी माँ को आवाज़ लगाई। उसके माता-पिता ने सोचा कि शायद उसे बुखार है और कुछ दवा दी। जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि कुछ गड़बड़ है और वे उसे पास के एक निजी अस्पताल में ले गए। वहाँ के डॉक्टर समझ नहीं पाए कि दिक्कत क्या है और कुछ देर बाद उन्होंने उसे सिविल अस्पताल रेफर कर दिया। वहाँ भी यही हुआ और अधिक समय

गँवाने के बाद वे दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल पहुँचे। इस समय तक बच्चा भयंकर दर्द में था। उसकी आँखें नहीं खुल रही थीं और उसका शरीर नीला पड़ रहा था। वहाँ एक लैब तकनीशियन ने पहचाना कि बच्चे को साँप ने काटा है। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और हमने एक अनमोल जीवन खो दिया। अगर वह कसकर बन्द की गई मच्छरदानी के अन्दर सोया होता तो साँप उस तक नहीं पहुँच पाता। अगर उसके माता-पिता यह समझ पाते कि बारिश के मौसम में आधी रात को अचानक होने वाला भयानक दर्द साँप के काटने का संकेत हो सकता है और अगर उन्हें पता होता कि साँप के काटने का इलाज करने वाला सबसे नज़दीकी अस्पताल कहाँ है तो हम उस बच्चे को नहीं खोते। शायद किसी भी माता-पिता के लिए यह जान पाना कठिन है, लेकिन हम इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से सबक ले सकते हैं।

क्या करें और क्या ना करें

इस यात्रा में हर व्यक्ति की भूमिका है और जागरूकता शायद पहला व बेहद महत्वपूर्ण कदम है। साँप के काटने से बचने के लिए इन बातों का पालन करो:

- साँपों, उनकी आदतों, उनके रहने की जगहों और वे किन मौसम में सक्रिय रहते हैं इस सबके बारे में पढ़ो ताकि उनसे बचा जा सके।
- अपने घर और आसपास की जगह को साफ रखो – खाने की बची-खुची चीज़ें, ईंधन की लकड़ी या घर के पास के रखे कण्डे चूहों और साँपों को आकर्षित करते हैं।
- रात में हमेशा जूते पहनकर और टॉर्च लेकर बाहर निकलो। सोते समय भी टॉर्च पास रखो।
- छड़ी साथ में रखो और चलते समय उसे ज़मीन पर ठोंकते जाओ ताकि साँपों को दूर जाने के लिए समय मिले।
- साँपों को परेशान करने या पकड़ने की कोशिश मत करना। इससे काटे जाने का खतरा बहुत बढ़ जाता है। साँप पकड़ने वाले किसी प्रशिक्षित व्यक्ति को बुलाओ।
- अगर बाहर सो रहे हो तो ज़मीन पर सोने से बचो और हमेशा अच्छी तरह से कसी हुई मच्छरदानी के अन्दर ही सो।

साखड़ (Common Wolf Snake) साँप ज़हरीला नहीं होता है। यह कॉमन क्रेट की नकल करता है।

भारतीय अजगर (Indian Rock Python) के बच्चों को कई बार रसैल वाइपर समझ लिया जाता है।
फोटो: जयेन्द्र चिपुलकर

धामन साँप (Rat Snake) को अक्सर गलती से कोबरा समझ लिया जाता है। यह ज़हरीला नहीं होता और चूहों की आबादी को नियंत्रित करने में मदद करता है।
फोटो: राहुल अल्वारेज़

गामा (Cat snake) साँप ज़हरीला नहीं होता। यह सॉ-स्केल्ड वाइपर की नकल करता है।
फोटो: विवेक शर्मा
Indiansnakes.org

इन सभी सावधानियों के बावजूद भी साँप के काटने की घटना हो सकती है।
अगर तुम्हें साँप के काटने का ज़रा भी शक हो तो:

- साँप से दूर चले जाओ, इतनी दूर कि वह तुम पर हमला ना कर सके।
- साँप को पकड़ने या मारने की कोशिश बिलकुल मत करना। हो सकता है कि वह तुम्हें फिर से काट ले और तुम्हारा कीमती समय बरबाद हो जाए। उसका रंग और आकार याद रखने की कोशिश करना ताकि तुम उसके बारे में बता सको। इससे इलाज में मदद मिलेगी। अगर तुम्हारे पास स्मार्टफोन है और साँप की फोटो खींचने से इलाज के लिए मदद मिलने में देरी ना हो रही हो तो सुरक्षित दूरी से एक फोटो खींच लो ताकि उसे पहचानना आसान हो।
- घबराओ नहीं, शान्त रहो। बहुत सम्भावना है कि साँप ज़हरीला न हो। अगर ज़हरीले साँप ने काटा हो तो भी शान्त रहने से ज़हर धीमे फैलता है।
- किसी वयस्क को बुलाओ और बताओ कि तुम्हें साँप ने काट लिया है और तुम्हें तुरन्त अस्पताल ले जाने की ज़रूरत है।
- सूजन को बढ़ने से रोकने के लिए गहने, अँगूठियाँ, पायल और तंग कपड़े उतार दो।
- हो सके तो अपने शरीर को इस तरह से रखो कि काटने की जगह तुम्हारे दिल के समतल पर या उससे नीचे हो।
- घाव को साबुन और पानी से साफ करो। उसे साफ, सूखे कपड़े से ढँक दो।
- किसी बाबा के पास जाने में अपना कीमती समय बर्बाद मत करो।
- ना ही अपने मन से कोई भी दवा लो।
- घाव को काटकर, चूसकर या अन्य किसी भी तरीके से ज़हर निकालने की कोशिश मत करो। काटे गए हिस्से को ना तो धो, ना बर्फ लगाओ और ना ही घाव पर पट्टी बाँधो।

  (इनमें से कुछ तरीके पहले अपनाए जाते थे, लेकिन वे गलत हैं और अब उन्हें छोड़ दिया गया है।)
- चाय या कॉफी मत पियो। इससे ज़हर तुम्हारे शरीर में तेज़ी-से फैल सकता है।
- सुनिश्चित करो कि काटे गए अंग या शरीर का हिस्सा स्थिर रहे और तुरन्त अस्पताल जाओ।
- ध्यान रखना कि हर अस्पताल में साँप के काटने का इलाज नहीं होता है। इसलिए अपने माता-पिता, रिश्तेदारों, शिक्षकों की मदद से पहले से पता करके रखो कि आपके नज़दीक में कौन-से अस्पताल में साँप के काटने का इलाज होता है। इस जानकारी के लिए साँप के काटने का इन्तज़ार मत करो।

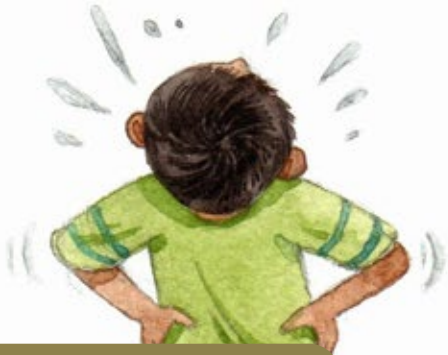

रंगोली

शुभम लखेरा

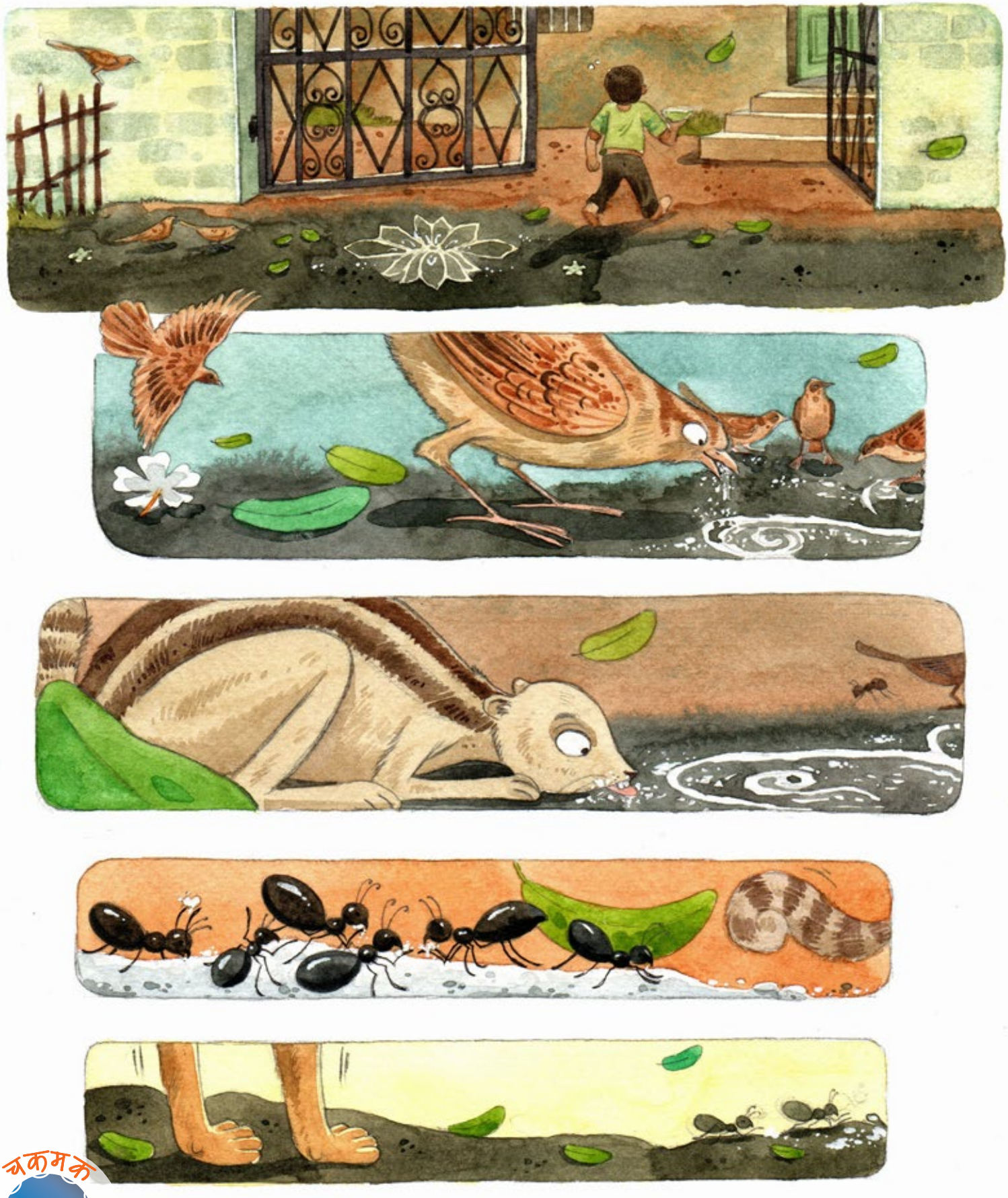

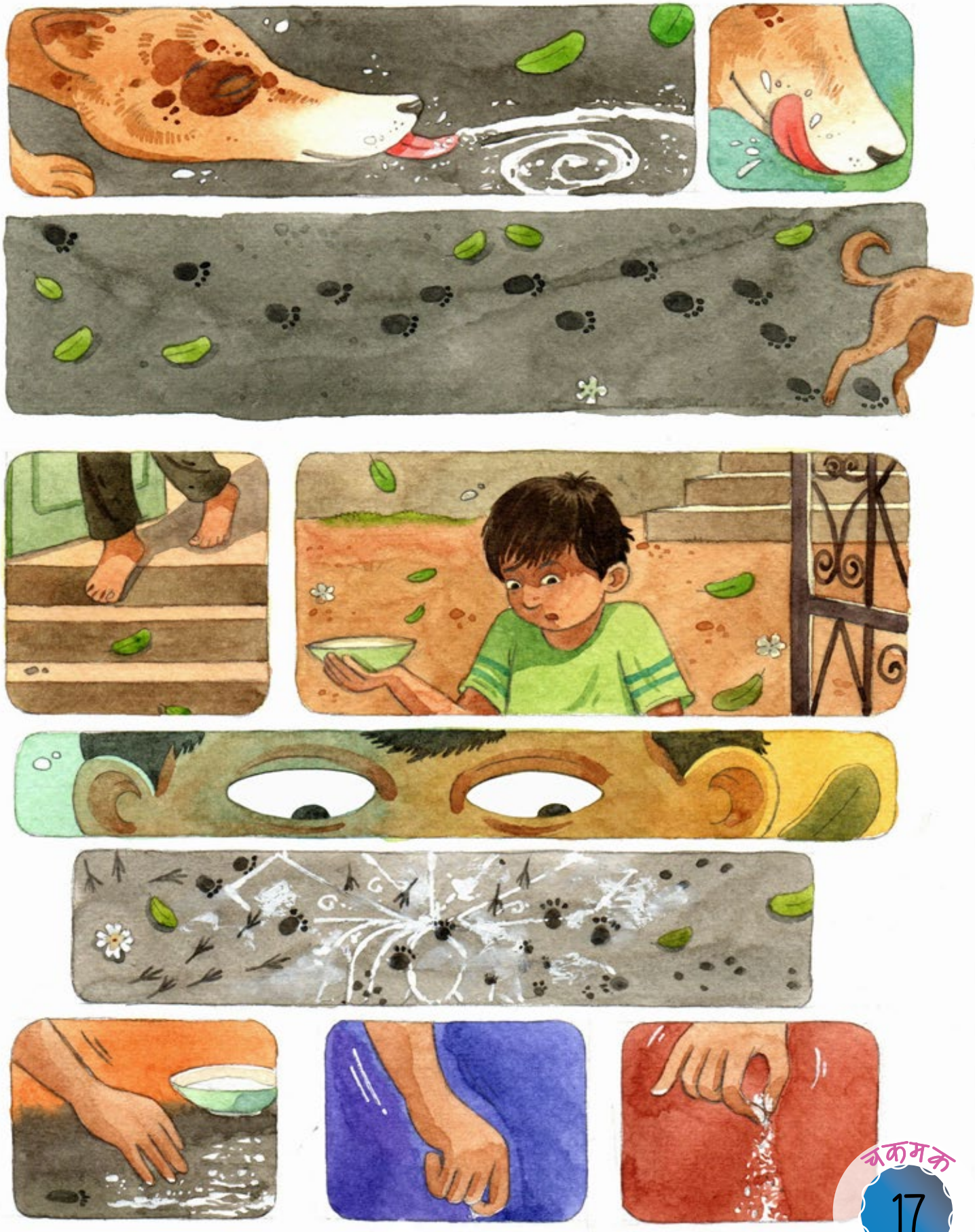

कटपीस कुमार

लेखक व चित्रकार: इन्दु हरिकुमार
प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
समीक्षक: प्रणाली देशमुख, चौथी, विंध्यवासिनी हायर सैकेंडरी स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

कल मैंने एक कहानी सुनी। कहानी का नाम था *कटपीस कुमार*। उसमें कटपीस कुमार एक बच्चे का नाम था। मुझे उस कहानी में बहुत मज़ा आया। उस कहानी के जैसा एक बार मेरे साथ भी हुआ था। मैंने भी कटपीस कुमार की तरह अपनी बहन रिषिका के लिए झूला सजाया था। और मेरे पापा ने मेरी बहन के लिए छोटे-छोटे सुन्दर मुलायम कपड़े खरीदे थे। मेरी मम्मी को हमेशा मेरी छोटी बहन के पास रहना पड़ता था। आपको भी पता ही होगा कि छोटे बच्चे अपनी मम्मी के बिना नहीं रहते हैं। अगर उनकी मम्मी उनके साथ ना हो तो वो सारा घर सर पर उठा लेते हैं।

कुतुबमीनार का पेड़ पुस्तक के नाम में ही लेखक की कल्पनाशीलता झलक रही है। इसमें छह मज़ेदार और रोमांचक काल्पनिक कहानियाँ हैं। अगर मज़े के नज़रिए से देखें तो सारी कहानियाँ काफी अच्छी और हास्यपूर्ण हैं। लेकिन कहानियों में मुझे कोई ऐसा सन्देश-सा नहीं लगा, जो लेखक इन कहानियों के माध्यम से हमें देना चाहते हैं। कहानियों को पढ़ते समय ऐसा लग रहा था कि उसमें बताई घटना मेरी आँखों के सामने उसी समय हो रही हो। इसका एक कारण शायद हर पन्ने पर बना चित्र है। चित्रों को देखकर लगता है कि चित्रकार ने पूरी की पूरी कहानी बिना कुछ कहे, कह दी। ग्यारहवें पन्ने पर जो बाघ की तस्वीर है, उसे तो मैं घण्टों निहारती रह गई। ऐसा लगा जैसे मैं उसमें खो गई हूँ। सारी कहानियाँ बच्चों के लिए ही लिखी गई हैं।

मेरे ख्याल से इस पुस्तक की कहानियाँ और भी ज़्यादा अच्छी होतीं जब लेखक उनमें कोई सन्देश देता, क्योंकि यह बाल कहानियाँ हैं। लेकिन लेखक ने हर कहानी में अलग ही शैली का प्रयोग किया है। इससे कहानियाँ काफी मज़ेदार हो गई हैं। जैसे 'कुतुबमीनार का पेड़' कहानी में लेखक ने हर पंक्ति में लगभग 'किसी तरह' शब्द का प्रयोग किया जो वाकई इस कहानी को मज़ेदार बनाता है। इसी तरह की पाँच और प्यारी-प्यारी कहानियाँ हैं – 'मेमना', 'बाघ देखने की इच्छा', 'जामुन का पेड़', 'आमचोर' और 'पिंकू के पापा'।

कुतुबमीनार का पेड़

लेखक: प्रभात
चित्रकार: कविता सिंह काले
प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन
समीक्षा: पीहू कुमारी, सातवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

चित्रपहेली

सुडोकू 86

5		9	7	1	4			
3					6		1	
9	5	3					4	
	7			4	5	8		
		8	6			3	5	1
1	9					2	3	8
8			9			5		
4	3	7			2			

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

जवाब पेज 42 पर

बरसै बदरिया सावन की

मीराबाई

चित्र: नैनसुख

बरसै बदरिया सावन की
सावन की मनभावन की।

सावन में उमग्यो मेरो मनवा
भनक सुनी हरि आवन की।

उमड़-घुमड़ चहुँ दिस से आयो
दामण दमके झर लावन की।

नान्हीं-नान्हीं बूँदन मेहा बरसै
सीतल पवन सुहावन की।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर
आनन्द मंगल गावन की॥

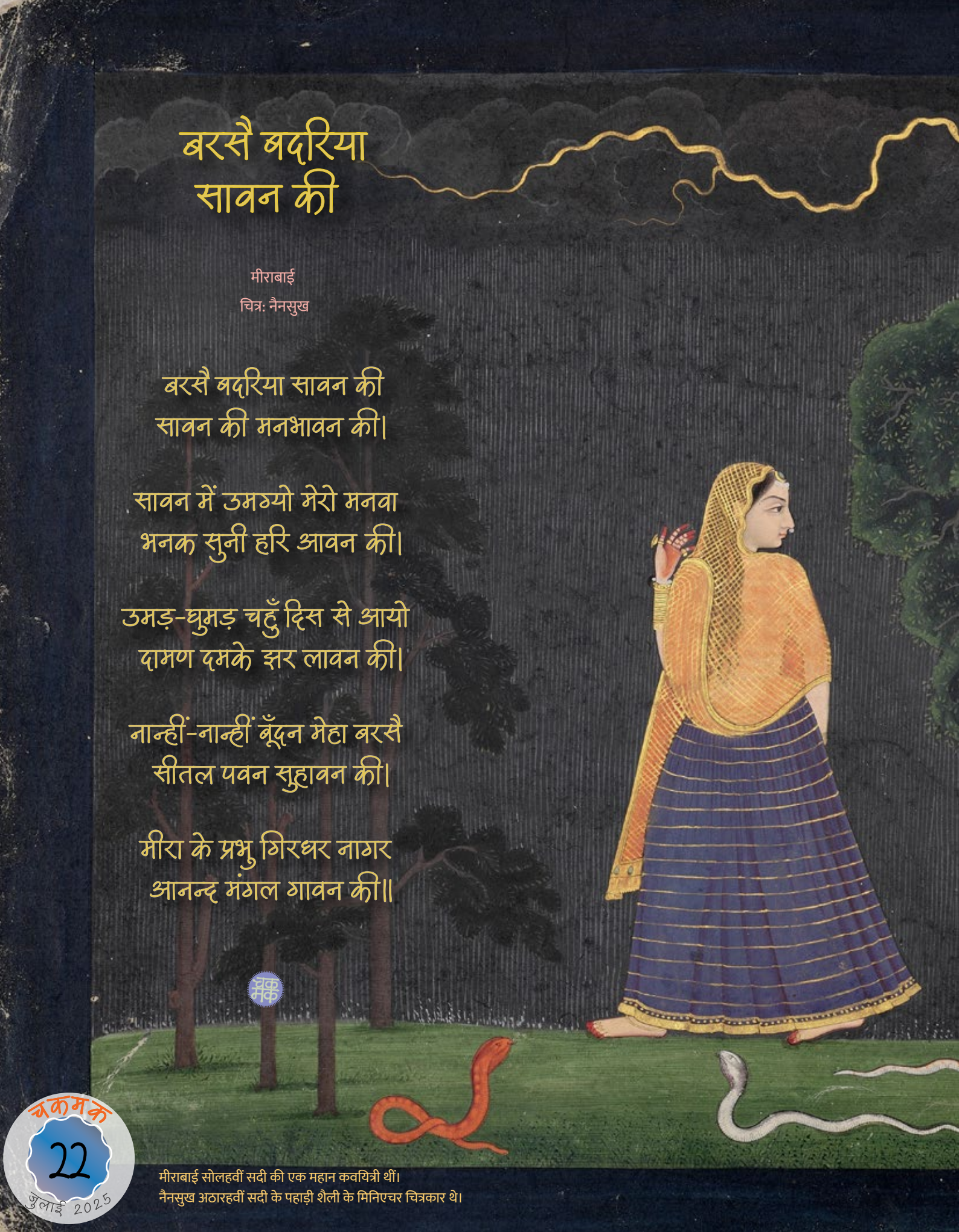

मीराबाई सोलहवीं सदी की एक महान कवयित्री थीं।
नैनसुख अठारहवीं सदी के पहाड़ी शैली के मिनिएचर चित्रकार थे।

चकमक
23
जुलाई 2025

क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:

यदि तुम कोई ऐसा नियम बना सकते जिसे दुनिया में सबको मानना होता, तो क्या बनाते और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:

अपनी रोज़मर्रा की बातचीत में हम कई मुहावरों का इस्तेमाल करते हैं। तुम्हें कौन-सा मुहावरा पसन्द है, और क्यों?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

ज़ोया खान, छठवीं, महार रेज़ीमेंट पब्लिक स्कूल, गढ़पहरा, सागर, मध्य प्रदेश

मैं यह नियम बनाना चाहूँगी कि सारे देश मिल-जुलकर रहें और आपस में लड़ाई ना करें। क्योंकि लड़ाई करने से आपस में दुश्मनी होती है। जब देशों के बीच लड़ाई होती है तो बम फेंकते हैं। इससे पेड़-पौधों को नुकसान होता है। वायु खराब होती है। वायु खराब होने के कारण लोग बीमार होते हैं। लड़ाई-झगड़े के कारण लोग घायल होते हैं। बच्चों पर भी इसका बुरा असर पड़ता है। जैसे कि बच्चों को लगता है कि वह देश गन्दा है। वही लड़ाई शुरू करता है। वो सोचते हैं कि उस देश में सारे लोग बुरे हैं। लड़ाई की वजह से स्कूल बन्द हो जाते हैं। वहाँ आसपास के घरों में तेज़ आवाज़ें आती हैं। इससे नॉइस पॉल्युशन होता है। वहाँ लोग काम नहीं कर पाते। सभी लोग आपस में बस लड़ाई-झगड़े की बातें करते हैं। टी वी में भी बस यही न्यूज़ बताते हैं।

आस्था भारती, छठवीं, सीख समूह, स्वतंत्र तालीम, मलसराय सेंटर, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

यह विचार मेरे दिमाग में आ रहा है कि डाकिया बिचारा पत्र देने घर-घर जाता है। फिर भी डाँट खाता है। जैसे कि कोई महिला काम कर रही हो और डाकिया गया और दरवाज़ा खटखटाया तो वो महिला गाली देते या बड़बड़ाती हुई गुस्से में कहेगी, "बता नहीं सकते थे।" इसलिए मैं यह नियम बनाऊँगी कि डाकिया रुपए भले ही ना पाए पर उससे गलत ढंग से बात ना की जाए। जितना वह डाँट खाता है, उससे ज़्यादा वह सरकार द्वारा खाना व रुपया पाए। और उसका घर-बार भी सरकार द्वारा चलते रहे। अगर कोई डाकिया को अपमानजनक बात कहे तो उसे दण्ड दिया जाए।

महिमा, पाँचवीं, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, मरोड़ा, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

मेरा नियम होता कि हर कोई दिन में कम से कम एक बार किसी को हँसाए। मैं बताती हूँ कि यह क्यों ज़रूरी है। हम सबको कभी-कभी दुख होता है। कोई बात बुरी लगती है या कुछ ऐसा होता है जिससे मन उदास हो जाता है। तब अगर कोई हमें हँसाता है तो सब कुछ थोड़ा आसान लगने लगता है। मन हल्का हो जाता है। मैंने खुद यह महसूस किया है।

एक बार मैं स्कूल में कुछ ठीक-से नहीं लिख पाई थी, तो मुझे बहुत बुरा लग रहा था। लेकिन मेरा दोस्त अंशुल बोला, "तू तो सीक्रेट सुपरस्टार है, तेरे पास टाइम नहीं होता!" और हम दोनों ज़ोर-से हँस पड़े। उसके बाद मैं और अच्छे-से पढ़ाई करने लगी।

सोचो अगर हर इन्सान रोज़ किसी एक को हँसाए, तो दुनिया कैसी हो जाएगी। दुकानदार जो दिन भर थकता है, उसे कोई बच्चा जोक सुना दे। एक बूढ़ी दादी, जिनसे कोई बात नहीं करता, को पोती कुछ मज़ेदार बात बता दे। क्लास में जो बच्चा अकेला बैठता है, कोई उसे हँसाने की कोशिश करे, तो उदासी कम होगी। लोग एक-दूसरे से और जुड़ेंगे। और सबसे बड़ी बात कि कोई अकेला नहीं लगेगा। स्कूल में भी 'हँसी टाइम' होगा तो बच्चों का मन पढ़ाई में और लगेगा।

मैं चाहती हूँ कि सब इस नियम को मानें। क्योंकि सब जल्दी में हैं। कोई रुककर बात नहीं करता। लेकिन जब कोई आपको हँसाता है, तो आप रुकते हो, मुस्कराते हो और महसूस करते हो कि कोई है जो आपकी परवाह करता है।

आरोही अटवाल, पाँचवीं, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, नानकमत्ता, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

ऐसा नियम जिसमें भी लोगों के पास अपना जी.पी.एस. होना चाहिए। आप सोचोगे ये जी.पी.एस. क्या है। तो जी.पी.एस. है – ग्लास, प्लेट और स्पून। सभी लोगों को अपने पास ये तीन चीज़ें हमेशा रखनी चाहिए ताकि कभी भी, कहीं भी, कुछ भी खाते समय किसी को भी डिस्पोज़ेबल ग्लास, प्लेट या स्पून का इस्तेमाल ना करना पड़े। इसके बहुत सारे फायदे हैं। जैसे कि डिस्पोज़ेबल बरतन के ऊपर जो प्लास्टिक होता है वो खाने के साथ हमारे शरीर के अन्दर नहीं जाएगा। जानवर इधर-उधर पड़े डिस्पोज़ेबल बरतन नहीं खाएँगे। और हमारा इन्वॉयर्मेंट साफ रहेगा।

खुशी, सत्रह साल, निरन्तर संस्था, कच्ची खजूरी सेंटर, दिल्ली

आधार कार्ड बहुत ज़रूरी ना हो। इसके ना होने से कई ज़रूरी काम रुक जाते हैं। यहाँ तक कि राशन भी नहीं मिल पाता है दुकान से।

हिमाक्षी भट्ट, पाँचवीं, डॉ वीरेन्द्र स्वरूप पब्लिक स्कूल, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

सब लोग सुबह उठकर छह बजे पॉटी जाएँ ताकि बाद में ठूँसकर पसन्द की चीज़ें खा सकें। और कोई किसी का मर्डर ना करे, जानवरों का भी नहीं क्योंकि किसी की जान लेना गलत बात है।

पीहू कुमारी, आठवीं, किलकारी बाल भवन, पटना, बिहार

वह नियम होता कोई भी शिक्षक किसी बच्चे को दो-चार किताबों से ज़्यादा किताबें लाने को नहीं बोल सकता। इससे हमारा स्कूल बैग हल्का होता और उसे लाने में हमें आसानी होती।

चित्र: मिष्ठी, पाँचवीं, अपना स्कूल, तातियागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

संस्कार, चौथी, स्वतंत्र तालीम, आशियाना सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मैं यह नियम बनाऊँगा कि कोई भी बाइक से कुत्ते को ठोककर नहीं जाएगा। दण्ड में मैं उन्हें 10 दिन तक बाइक नहीं चलाने दूँगा।

तमन्ना भारद्वाज, नौवीं, रमणा विद्यालय, शोलिंगनलूर, चेन्नई, तमिलनाडु

मैं यह नियम बनाती कि हर बच्चे को दोपहर के खाने के बाद एक घण्टे सोने का वक्त दिया जाए। यह बहुत ज़रूरी है क्योंकि इससे एकाग्रता बढ़ती है। तथा दोपहर को जब अध्यापक पढ़ा रहे हों तो बच्चे ज़्यादा ध्यान दे सकेंगे। दोपहर को सोने के बाद उतनी ही ताकत मिलती है जितनी कि सुबह उठने से। यह अभ्यास चीन जैसे देशों में काफी कॉमन है।

युवराज पल्याल, पाँचवीं, आरोही बाल संसार, ग्राम प्यूड़ा, नैनीताल, उत्तराखण्ड

मेरा पहला नियम होगा कि कोई भी 80 से अधिक गति से वाहन न चलाए क्योंकि अधिक गति से वाहन चलाना ठीक नहीं है। दूसरा नियम होगा कि जाड़ों और गर्मियों के मौसम में 2 महीने की छुट्टियाँ दी जाएँ ताकि जिस बच्चे को देर से उठना हो वो देर से उठ सके और जिसका मन खेलने को करे वह खेले।

चिराग ठाकुर, ग्यारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

मैं नियम बनाता कि जो छुट्टियाँ होती हैं वो निश्चित दिनांक के हिसाब से नहीं होनी चाहिए, बल्कि मौसम के हिसाब से होनी चाहिए।

गीता पुरोहित, सातवीं, न्यू विज़न फाउंडेशन, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

पहला नियम होगा कि घर के सभी सदस्य एक समय का भोजन एक साथ मिलकर करेंगे। इससे घर में खुशी और प्यार का माहौल बनेगा।

दूसरा नियम होगा कि प्रतिदिन सभी सदस्य एक साथ बैठकर *चकमक* पत्रिका के किसी एक विषय को पढ़कर बारी-बारी से उस पर चर्चा करेंगे।

प्रिया यादव, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, टेमिल, मरोड़ा, केसला, मध्य प्रदेश

हम सप्ताह में एक दिन सभी महिलाओं को काम से छुट्टी दी जाए ताकि वो उस दिन को अपनी पसन्द या इच्छा से जी सकें। क्योंकि बाहर महीनों वो सुबह से शाम तक घर-खेतों में काम करती रहती हैं। खुद के लिए उनके पास समय ही नहीं होता है।

अक्षत पाठक, छठवीं, केन मेमोरियल स्कूल, सूर्यापारा, सरगुजा, छत्तीसगढ़

मैं नियम बनाता कि कोई भी अमीर-गरीब को लेकर मज़ाक नहीं बनाएगा। और ना ही जाति या ऊँच-नीच या छुआछूत को मानेगा। ऐसा नियम इसलिए क्योंकि भारत में आज भी बहुत-से ऐसे लोग हैं जो यह सब बात मानते हैं।

चमन लाल, नौवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

मेरा यह अनिवार्य नियम रीसाइक्लिंग का होगा। इसका उद्देश्य कचरे को कम करना और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना है। घरों एवं उद्योगों द्वारा पैदा किया गया कचरा हमारी पृथ्वी के लिए बड़ा खतरा है। इससे प्रदूषण के साथ-साथ प्राकृतिक सम्पदा का ह्रास भी होता है। इस नियम के तहत प्रत्येक व्यक्ति एवं व्यवसायी को अपने कचरे का कुछेक निश्चित प्रतिशत रीसाइकिल करना ज़रूरी होगा। यह कानून न केवल ज़िम्मेदार कचरा प्रबन्धन को प्रोत्साहित करेगा बल्कि नागरिकों के बीच पर्यावरण जागरूकता एवं ज़िम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देगा।

आयुष भारद्वाज, छठवीं, पोखरामा फाउंडेशन एकैडमी, पोखरामा, लखीसराय, बिहार

मैं दो नियम बनाना चाहूँगा।

मैं कई बार सुना हूँ कि कुछ स्कूलों में बच्चों की छोटी-छोटी चीज़ें खो जाती हैं कि जैसे कि पैन, पेंसिल आदि। इसलिए मैं यह नियम बनाऊँगा कि स्कूल में पिटारा या एक काउंटर बनाया जाए जहाँ पर खोया हुआ सामान रखा जा सकता है।

मैं गाँव में कई बार सुनता हूँ कि गरीब लोग पानी लाने के लिए 5-7 मील दूर जाते हैं। लेकिन उसी गाँव के कुछ अमीर लोगों के पास पानी का साधन है। फिर भी वो देना नहीं चाहते। इसलिए मैं यह नियम बनाऊँगा कि जिन भी अमीर लोगों के पास पानी का साधन है और वो पानी नहीं देंगे तो उन्हें भी 5-7 मील चलकर पानी लाना होगा। इससे उन्हें भी पता होगा कि 5-7 मील दूर जाकर पानी लाना कितना कठिन होता है।

नबा खान, आठवीं 'बी', सेंट फ्रांसिस स्कूल, गोमती नगर विस्तार, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

वह नियम होगा हर किसी को हर दिन एक अच्छा काम करना होगा और उसे लिखना भी होगा। क्योंकि दुनिया में अगर हर कोई हर दिन एक अच्छा काम करे, जैसे किसी की मदद करना या पेड़ लगाना आदि तो दुनिया बहुत अच्छी हो जाएगी। और जब हम उसे लिखेंगे तो वह याद भी रहेगा और हमें उस गर्व भी होगा।

ननकी और चोरू की दुनिया

लॉरेंस हूग
चित्र: नन्दिनी लाल
अनुवाद: सुशील जोशी

तीन दिन और तीन रातों से वे उसकी बाट जोह रहे थे। बच्ची मन पक्का नहीं कर पा रही थी कि आकर अपने परिवार से मिले और रंग-बिरंगी दुनिया को देखे। उसकी माँ बेसब्र हो रही थी। साथ ही पिता और पूरा घर भी।

चौथी रात चाँद खिड़की के पास पहुँचा। उसकी धुँधली-सी रोशनी बिस्तर पर पड़ी। इसके कुछ ही मिनट बाद एक किलकारी गूँजी। और घर भर ने राहत की साँस ली।

कुछ बच्चे गंजे पैदा होते हैं। कुछ के सिर पर बस दो-चार बाल होते हैं। पर इन सबसे अलग, ननकी इस दुनिया में बालों के एक गुच्छे को उँगली में पकड़े आई थी, मानो कोई ब्रश पकड़े हो। जब दाई ने उसके हाथ से गुच्छे को अलग करने की कोशिश की, तो वह मचल उठी और ज़ोर-से रोने लगी। उसके गोल-मटोल गाल अंगारों जैसे लाल हो गए। यह सुनकर उसके पिता मुस्कराए और सोचने लगे, “हमारे परिवार की लड़कियाँ यूँही किसी के कहने पर नहीं चलतीं।”

जब ननकी अपने आप खाने लगी, तो उसने खाने से अपनी थाली के किनारे पर लकीरें खींचना शुरू कर दिया। जब वह घुटनों के बल चलने लगी, तो उसने घर की देहली पर धूल का खज़ाना खोज निकाला, जहाँ वह अपनी उँगलियों से चित्र बना सकती थी। जब वह खड़ी होने लगी, तो रसोई से थोड़ा आटा चुराकर उससे फर्श पर बेल-बूटों जैसे चित्र बनाने लगी। माँ डाँटतीं लेकिन उस पर कोई असर नहीं होता। वह ना तो दादा के तराशे हुए लकड़ी के घोड़े को पीछे-पीछे लेकर घूमतीं, और

ना ही उस गुड़िया को झुलाती जो चिन्दियों को सिलकर दादाजी ने उसके लिए बनाई थी। उसे जो चीज़ लुभाती थी, वह थी अपनी बड़ी बहन के पेंसिल बॉक्स में रखा काला पेन, डाकिये की कमीज़ की जेब में रखी भूरी पेंसिल।

ननकी बड़ी होती गई और साथ ही चित्र बनाने की उसकी इच्छा भी। वह हर जगह चित्र बनाती – कभी कोयले के टुकड़े से, तो कभी पेंसिल के टुकड़े से, कभी गली में से उठाए किसी कागज़ पर, तो कभी किसी पत्ती पर। कभी उन खेतों में जहाँ वह बकरियाँ चराती थी, कभी उस बस अड्डे पर जहाँ वह पिताजी के साथ इन्तज़ार करती थी, तो कभी उस दवाखाने में जहाँ माँ इलाज के लिए जाती थीं। कोई उसे रोकने की कोशिश करता, तो वह रोने लगती। कभी-कभी तो इतनी सिसकियाँ लेती कि लगता जैसे गला रुँध गया हो।

उसके बाल, जो जन्म से लम्बे थे, ताउम्र काले ही रहे। लेकिन उसकी आँखें रोशनी के साथ छटा बदलती थीं; जैसे चाय की रंगत उसे बनाने वाले के हाथों के साथ बदल जाती है। उसकी बहन कहती थी कि उसकी आँखों का रंग मटमैला है। दादी कहती थीं कि उसकी आँखें वैसे ही झिलमिलाती हैं, जैसे बारिश के समय नदी, और कई लड़के उनमें डूब जाएँगे।

समय बीतता गया। ननकी अब बड़ी हो गई थी। आज भी जब वह शक्कर चुराकर मेज़ पर चित्र बनाती तो माँ चिल्लाती तो थीं, लेकिन मन ही मन उन्हें अपनी बेटी पर गर्व था। बचपन में उन्हें भी चित्र बनाना अच्छा लगता था, लेकिन उन्हें डाँट पड़ती थी। उन्हें कहा जाता कि लड़कियों को तो बस सूरज जैसी गोल रोटी बनानी आनी चाहिए और उनकी प्रतिभा यहीं तक सीमित रहनी चाहिए। रात को करवटें बदलते हुए वे ननकी के बारे में सोचती रहतीं कि उसका क्या होगा।

कई महीनों से ननकी की माँ बगैर रुके लगातार खाँसती रहतीं। दिन के समय उनकी चिन्ताएँ बेटी द्वारा धूल में उँगलियों से उकेरे गए फूलों और परिन्दों में गुम हो जाती थीं। अपना काम पूरा करके वे उसे निहारने के लिए बाहर सूरज के साए में बैठ जातीं – सूरज जो रोटी जैसा गोल था और उनकी सीने में जलती आग जैसे तपता था।

स्कूल में ननकी अपने सहपाठियों के साथ ज़्यादा नहीं बतियाती थी। वह हाथ में एक पेंसिल थामे अपना सिर नोटबुक पर झुकाए रखती। गणित के जो सवाल उसे दिए जाते, उनके जवाबों की जगह पर शिक्षक को अक्सर गायें, पेड़, मकड़ियाँ और पतंगे देखने को मिलते।

एक दिन शिक्षक ननकी के घर आईं। उन्हें आता देखकर ननकी बहुत डर गई। सोचने लगी कि पता नहीं शिक्षक माता-पिता को क्या कहने वाली हैं। माँ ने ननकी को पानी लाने को कहा। वह सिर झुकाए, आँखें नीचे किए हुए पानी ले आई। उसका दिल वैसे ही काँप रहा था, जैसे गिलास में पानी। शिक्षक ने एक घूँट पिया और घर की दीवारों और फर्श पर बने चित्रों को देखकर मुस्कराईं।

फिर बोलीं, "आपकी बेटी बहुत होनहार है। यदि आपको एतराज़ न हो तो हम उसे एक बेहतर स्कूल में भेज सकते हैं। वहाँ से पढ़ने के बाद उसे अच्छी नौकरी भी मिल जाएगी।"

माँ ने आँखें नीचे कर लीं और बोलीं, "मुझे अपने पति से बात करनी होगी।"

जाते-जाते शिक्षक ने ननकी को एक पैकेट थमा दिया। पैकेट में छह चॉक थीं, एक सफेद और पाँच रंगीन। इतना सुन्दर तोहफा तो उसे पहले कभी नहीं मिला था। उसने तय किया कि वह इसका उपयोग अपनी खुशी को साकार करने के लिए

करेगी। पर इसके लिए उसे एकदम सही जगह ढूँढनी होगी, सोचना होगा।

उस शाम घर चर्चाओं से गूँज उठा। खाँसी के दौरों के बीच उसकी माँ चाहती थीं कि शिक्षक की बात मान ली जाए। पिताजी समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें, तो वे चुप रहे। दादी और दादा अपनी-अपनी बात कहना चाहते थे। यही स्थिति जीजाजी की भी थी। आखिरकार सब बोलने लगे और बहस छिड़ गई।

शोरगुल सुनकर पड़ोसी भी आ धमके। देखते ही देखते आधा गाँव आँगन में जुट गया। अब मामला यह हो गया था कि कौन ज़्यादा ज़ोर-से बोलता है। ननकी रसोई के एक कोने में दुबक गई, सिर पर दुपट्टा ओढ़े। उसे सारी बातें सुनाई दे रही थीं।

स्कूल में ननकी अपने सहपाठियों के साथ ज़्यादा नहीं बतियाती थी। वह हाथ में एक पेंसिल थामे अपना सिर नोटबुक पर झुकाए रखती। गणित के जो सवाल उसे दिए जाते, उनके जवाबों की जगह पर शिक्षक को अक्सर गायें, पेड़, मकड़ियाँ और पतंगे देखने को मिलते।

"लड़की पढ़ने के लिए अकेली शहर नहीं जा सकती।"

"यह तुम्हारे लिए शर्म की बात होगी।"

"लड़की पढ़-लिखकर क्या करेगी?"

"फटाफट उसकी शादी कर दो। फिर उसके पास करने के लिए चित्र बनाने से कहीं ज़्यादा ज़रूरी काम होंगे।"

और भी बहुत कुछ कहा गया।

काफी कुछ सुनने के बाद जब बर्दाश्त नहीं हुआ तो ननकी रसोई के कोने से कूदी और आँगन पार करके अँधेरे में ओझल हो गई।

वह दौड़ी, पीछे मुड़कर देखे बिना। उन सारी आवाज़ों को सुने बिना जो उसे रुकने का हुक्म दे रही थीं। रास्ते में उसे गाँव का मुखिया मिला। हाल ही में धुली सफेद कमीज़ पहने वह ये देखने आ रहा था कि चल क्या रहा है। धड़ाम! ननकी का सिर जाकर मुखिया की तोंद से टकराया। "नन्ही शैतान" मुखिया ने कहा और उसका हाथ पकड़ लिया। "तू ही है इस सारे बखेड़े की जड़?" ननकी ने अपना हाथ छुड़ाया और फिर से दौड़ पड़ी। "देखना, हम तुझे काबू में करके रहेंगे" मुखिया पीछे से चिल्लाया।

वह और तेज़ भागने लगी। थोड़ी ही देर में वह गाँव के बाहर थी। आगे का रास्ता खेतों में से होकर जाता था। पीछे से गाँव वालों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, जो उसे वापिस बुला रहे थे। और लोगों के कदमों की आहटें भी जो उसे पकड़ने के लिए दौड़ रहे थे। बगैर सोचे वह बाईं ओर मुड़ी और रास्ता छोड़कर भागने लगी। वह ऊँची-ऊँची घास के बीच से बिना कोई आवाज़ किए फुर्ती से ऐसे निकल गई, जैसे कोई जंगली जानवर जो अपने पीछे कोई निशान नहीं छोड़ता।

वह भागती गई, और तब तक भागती रही जब तक कि पीछे-से चिल्लपों की आवाज़ें सुनाई देना बन्द न हो गईं। आखिरकार जब वह रुकी, तो देखा कि वह जंगल में काफी अन्दर तक घुस चुकी है। उसकी टाँगों पर झाड़ियों से लगी खरोंचें थीं, और चारों ओर मच्छर ही मच्छर थे।

वह तब तक चलती रही, जब तक कि थककर चूर नहीं हो गई। फिर वह एक पेड़ के नीचे गुड़ी-मुड़ी होकर लेट गई। जब उसने दुपट्टा ओढ़ा तो देखा कि चॉक का वह पैकेट उसके कुर्ते में फँसा था। वह उसे कसकर पकड़कर सो गई।

अगले दो दिन वह घने जंगल में भटकती रही। हर चरमराहट, चिर-चिर और पक्षियों की आवाज़ उसे चौंका देती। ननकी जानती थी कि वह बाघ और तेन्दुओं के इलाके में पहुँच चुकी है। वह डरी हुई थी, लेकिन इससे भी ज़्यादा डर उसे बड़ी तोंद वाले मुखिया और लड़कियों के बारे में उनके विचारों से था।

अगले अंक में जारी...

भाग - 13

मेहमान जो कभी गए ही नहीं

आर एस रेश्मू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन, दिव्या मुडप्पा,
अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...

जंगली पुदीना

वैज्ञानिक नाम: *एजिरैटम ह्युस्टोनिऐनम्* (*Ageratum houstonianum*)

मूल: मध्य अमेरिका और मेक्सिको

कैसे पहुँचा: उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में इसे लाया गया था, सम्भवत: एक सजावटी पौधे के तौर पर।

जंगली पुदीना एक जड़ी-बूटी है। इसका जीवन चक्र एक या दो साल का होता है। यानी कि एक या दो साल में इसका पौधा खतम हो जाता है। और फिर नया पौधा उगता है। यह 20 सेंटीमीटर से एक मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। इसके तने या तो सीधे खड़े होते हैं, या फिर ज़मीन पर फैलते हैं और जहाँ-जहाँ ये मिट्टी को छूते हैं वहाँ जड़ें जमाते हैं।

इसके पत्ते विपरीत क्रम में जुड़े होते हैं। ये अण्डाकार या त्रिकोण आकार के हो सकते हैं। इनकी लम्बाई 1-6 सेंटीमीटर व चौड़ाई 1-5 सेंटीमीटर होती है। पत्तों के किनारे असमान रूप से दाँतेदार या लहरदार होते हैं। पत्तों की ऊपरी सतह रोएंदार और गहरे हरे रंग की होती है, जबकि निचली सतह हल्के हरे रंग की और कम रोएंदार या चिकनी होती है।

जंगली पुदीने के फूल टहनियों के सिरों पर गुच्छों में खिलते हैं, जिनमें 5-15 पुष्पशीर्ष (flowerhead) होते हैं। (पुष्पशीर्ष बिना डण्ठल वाले छोटे-छोटे फूलों का घना गुच्छा होता है जो मिलकर एक बड़े फूल जैसा दिखता है।) ये नीले, बकाइन और लैवेंडर रंग के होते हैं। कभी-कभार ये सफेद रंग के भी होते हैं, पर ऐसा बहुत ही कम होता है।

यह पौधा बड़ी संख्या में बीज पैदा करता है जो हवा या पानी के ज़रिए फैल सकते हैं। यह फैलते तनों से नए पौधे उगाकर भी अपनी वृद्धि कर सकता है।

ऐस्टरेसी परिवार के एजिरेटम जाति के दो पौधे *ए. ह्यूस्टोनियम्* और *ए. कौनिज़ाइडिस* एक-दूसरे से बहुत मिलते-जुलते हैं। हालाँकि इनमें एक खास अन्तर यह है कि *ए. ह्यूस्टोनियम्* में पुष्पशीर्ष का आधार 3-6 मिलीमीटर चौड़ा होता है, जबकि *ए. कौनिज़ाइडिस* में 5-8 मिलीमीटर चौड़ा। इसके अलावा, जहाँ *ए. ह्यूस्टोनियम्* के पुष्पशीर्षों के चारों और मौजूद सहपत्र (फूल के आधार पर स्थित संशोधित पत्ते) पर कई चिपचिपे रोएं होते हैं, वहीं *ए. कौनिज़ाइडिस* के सहपत्रों पर कुछ ही रोएं होते हैं।

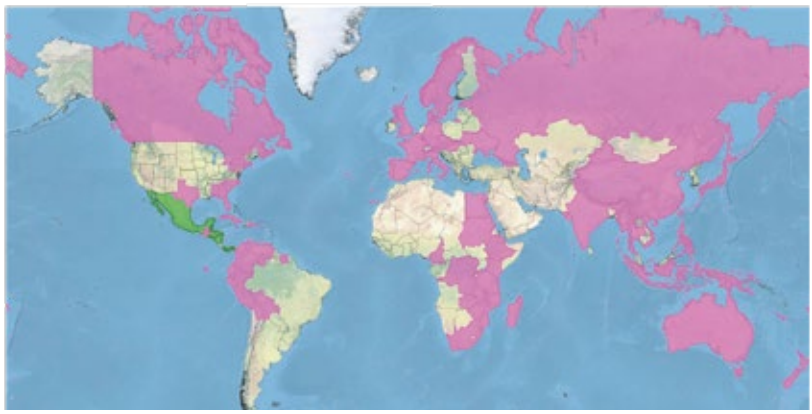

प्रवेश स्वाभाविक मूल जगह दर्ज नहीं

असर

जंगली पुदीना सड़कों के किनारों और पारिस्थितिक रूप से असन्तुलित क्षेत्रों में पाया जाता है। चारागाह, खेतों और जंगल में खुली जगहों में भी यह उगता है। ये घने झुण्डों (patches) में उगता है जिससे अन्य पौधे पनप नहीं पाते। पूर्वोत्तर भारत में यह किस्म और इसकी एक करीबी किस्म *ए. कौनिज़ाइडिस* झूम खेती के बाद सबसे पहले उगने वाले पौधों में से एक है।

जंगली पुदीना ऐजिरेटम ईनेशन वायरस (AEV) और रैडिश लीफ कर्ल वायरस (RaLCV) का मेज़बान पौधा होता है, यानी ऐसा पौधा जहाँ ये वायरस ज़िन्दा रहते हैं और अन्य पौधों को संक्रमित करते हैं। ये वायरस सजावटी पौधों और फसलों को बीमार कर सकते हैं। इसकी आक्रामक प्रकृति और प्रभावों को देखते हुए दक्षिण अफ्रीका में इसके आयात और खेती पर सख्त प्रतिबन्ध लगाया गया है।

बन्दोबस्त

इसके रासायनिक नियंत्रण (शाकनाशियों का इस्तेमाल करके) की कोशिश हुई है। लेकिन चूँकि यह पौधा खेती की ज़मीन में फैल जाता है, इसलिए इसकी रोकथाम के लिए 20% नमक के घोल के इस्तेमाल की सलाह दी जाती है।

1. दिए गए टुकड़ों से इस ग्रिड को भरो। तुम टुकड़ों को घुमाकर इस्तेमाल कर सकते हो।

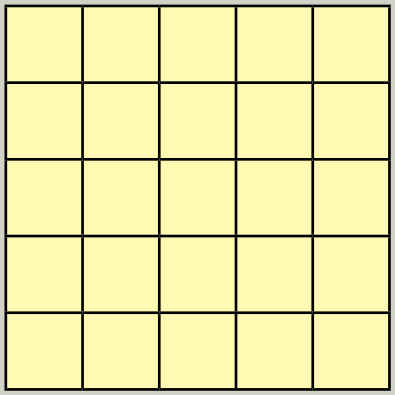

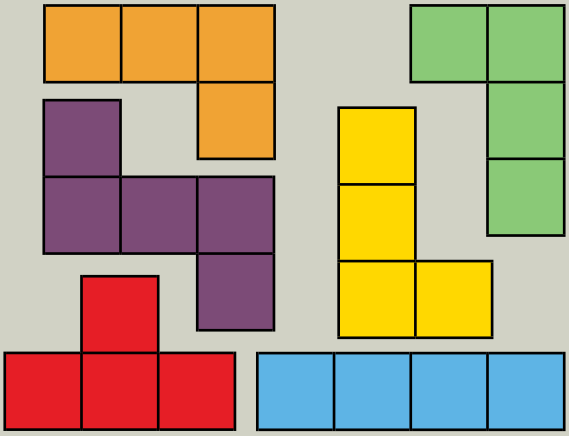

2. बेला, अमन, चारू, डेविड और इरा दोस्त हैं। उनके मकान नम्बर 11, 12, 13, 14 व 15 है। चारों दोस्तों की पसन्दीदा मिठाई अलग-अलग है — जलेबी, कलाकन्द, मालपुआ, चमचम और रबड़ी। दिए गए कथनों के आधार पर बताओ कि किसकी पसन्दीदा मिठाई क्या है और उसका मकान नम्बर क्या है?

1. इरा को जलेबी पसन्द है, पर उसका मकान नम्बर 15 नहीं है।
2. जिसे मालपुआ पसन्द है, उसका मकान नम्बर 15 है।
3. चारू को ना तो चमचम पसन्द है और ना ही कलाकन्द।
4. जिसे चमचम पसन्द है, उसका मकान नम्बर 11 है।
5. बेला को कलाकन्द पसन्द है और उसका मकान नम्बर 12 नहीं है।
6. जिसे रबड़ी पसन्द है उसका मकान नम्बर 14 है।
7. अमन को मालपुआ पसन्द है।

3. एक एक्टिविटी कराने के लिए मैडम ने अपनी क्लास के बच्चों को 3-3 के समूह में बाँटा। हरेक समूह ने अपनी गतिविधि में 9 क्रेयॉन्स का इस्तेमाल किए। अगर कुल 117 क्रेयॉन्स इस्तेमाल हुए हों तो बताओ कि क्लास में कुल कितने बच्चे थे?

4. चार बार 9 का इस्तेमाल करके उत्तर में 100 लाना है। तुम जोड़-घटाना, गुणा-भाग के चिह्नों का इस्तेमाल कर सकते हो।

5. सभी खाली जगहों में एक ही शब्द आएगा। कौन-सा?

..... से ..... हो गई हो तो उसे ..... जाना। याद रखना कि ..... को ..... जाना है, ... करने वाले को नहीं।

6. दी गई ग्रिड में मानव शरीर के कई सारे अंगों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

ता	ग	लू	पु	हों	मु	फे	म	ज
सि	र	ब	घु	पी	ठ	ल	फ	ब
का	द	पे	ट	गा	बा	ना	भि	ड़ा
म	न	ब	ना	क	ल	ल	खू	ग
खो	प	ड़ी	पा	म	ला	कि	ड	न
जी	दाँ	आँ	पै	र	प	स	ली	म
ए	ड़ी	त	ट	ख	कि	उँ	वा	स्ति
आ	मा	श	य	ड	ड	ग	दि	ष्क
ब	था	पिं	को	ह	नी	ली	व	र

माथापच्ची

7. केवल एक तीली को इधर-उधर करके दिए गए समीकरण को सही करो।

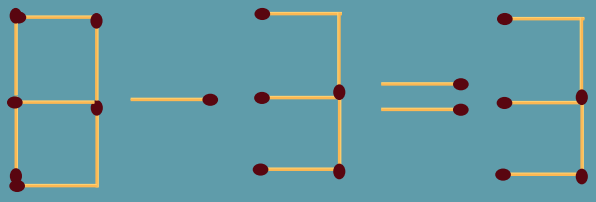

8. कौन-सा स्पाइरल बाकियों से अलग है?

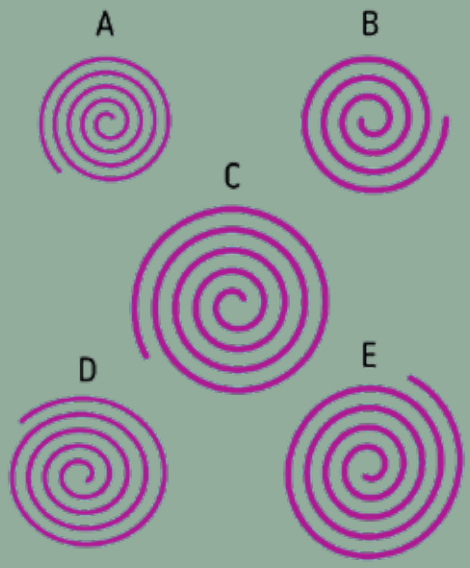

9. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग कैक्टस आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सा कैक्टस आएगा?

फटाफट बताओ

क्या है जिसे तुम बाएँ हाथ से पकड़ सकते हो पर दाएँ हाथ से नहीं?

(फिड़कि कि थाह ऍाब)

क्या है जिसे आग जला नहीं सकती और पानी डुबा नहीं सकता?

(तंफ)

ऐसी कौन-सी चीज़ है जिसे हम दिन भर में कई बार उठाते-रखते हैं?

(मफ़क)

एक जज का बेटा वकील है। पर वकील के पिता पुलिस हैं। तो फिर जज कौन है?

(ाँम)

सीधा करो तो नाम बताए उल्टा करो मना हो जाए

(माप)

ना देखे, ना बोले फिर भी भेद खोले

(ठ्ठिच)

जवाब पेज 42 पर

एलियन का रहस्य

अनुराग कुमार
छठवीं, राजा राम मोहन रॉय सेमिनरी हाई स्कूल, पटना
बिहार

एक वैज्ञानिक तीन सालों से रॉकेट पर काम कर रहा था। वह एक ऐसा रॉकेट बनाना चाहता था, जो अन्तरिक्ष में जाए और एलियन को पकड़कर लाए। पर एलियन भी चालाक था। उसने भी एक अदृश्य कैमरा पूरी पृथ्वी पर लगा दिया था। वैज्ञानिक की बात सुनकर एलियन डर गया। पर वह हार नहीं मानना चाहता था। उसने दिमाग लगाया और ज़बरदस्त आइडिया सोचा।

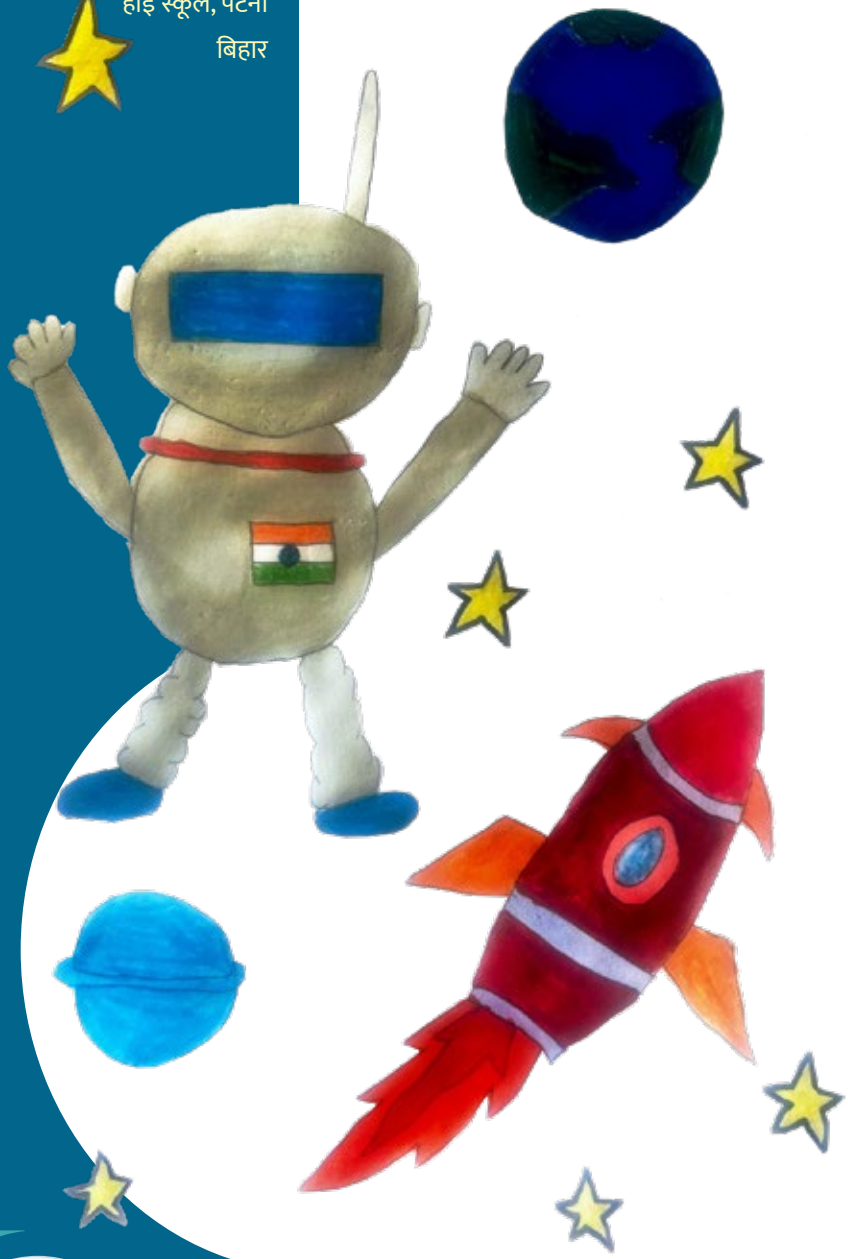

अगले दिन वैज्ञानिक रॉकेट पर चढ़कर चाँद पर पहुँचा। उसे जाने में दो दिन लगे। पर वैज्ञानिक को लगा कि मैं तो दो मिनट में पहुँच गया। कपड़े पहनकर वैज्ञानिक चाँद पर चलने लगा, लेकिन जब नीचे देखा तो चौंक गया। क्योंकि वह तो हवा में उड़ रहा था। लेकिन तब उसे अपनी किताब की बात याद आई। उसमें लिखा था चाँद पर हम लोग गुरुत्वाकर्षण बल के न होने के कारण उड़ते हैं।

उसे भी उड़ने में मज़ा आया। उसने सोचा, “यह कैसी दुनिया है, यहाँ तो पूरा आकाश काला है। ना कोई पक्षी, ना तालाब, कुछ नहीं है यहाँ। सिर्फ पत्थर ही हैं। कोई बात नहीं, यह एलियन का घर होगा। उसने सब कुछ अपने रूम में रखा होगा कि अगर कोई आएगा तो खाली देखकर भाग जाएगा। अपने आप को तेज़ समझता है एलियन। लेकिन उससे भी चालाक मैं हूँ।”

फिर एलियन ने कम्प्यूटर में देखा कि वैज्ञानिक चाँद पर पहुँच गया है।

चित्र: अदिति भट्ट, तीसरी, सन वैली स्कूल, देहरादून, उत्तराखण्ड

एलियन ने अपने सिपाही को वैज्ञानिक को लाने को बोला। जब वैज्ञानिक ने चारों एलियन को देखा, तो डर गया। हरे शरीर, नीले बाल, लाल गरदन, भूरी नाक। एलियन किसी राक्षस जैसा लग रहा था। उन्हें देख वैज्ञानिक बेहोश हो गया। चारों एलियन सिपाही वैज्ञानिक को ग्लासमैन के पास ले गए। वो सभी एलियन का राजा था।

फिर जब वैज्ञानिक को चाँटा मारा गया, तब वह होश में आया और ग्लासमैन को देखकर डर गया। ग्लासमैन बोला, “तुम क्यों आए बहादुर वैज्ञानिक? मैं ग्लासमैन हूँ। मैं अगर इन्सान को छूता हूँ तो इन्सान ग्लास बन जाता है। तुम लोग धरती को गन्दा कर चुके हो। इसलिए हम यहाँ चाँद पर रहते हैं। तो तुम लोग यहाँ क्यों ढूँढने आते हो?”

इतना कहकर ग्लासमैन इन्सान को ग्लास का बनाकर ब्लैक होल में फेंक देता है। फिर बोलता है, “आज से एलियन रहस्य बन जाएगा और कभी नहीं मिलेगा।”

तभी अचानक वैज्ञानिक की नींद खुल जाती है। और वह देखता है कि उसके टेबल पर एलियन का खिलौना रखा था।

मम्मी सपनों में रहती हैं

सन्नी कन्नौजिया
चौथी, कम्पोज़िट स्कूल, पिडरा
रुद्रपुर, देवरिया, उत्तर प्रदेश

हमारी मम्मी नहीं थीं। तब हम लोग बहुत छोटे थे, तो हम लोगों को भाई रख लिया। हम लोग वहीं पर रहते हैं। हमें मम्मी की याद आती है। एक दिन रात को हम सोए थे तो मम्मी सपने में आई थीं। मम्मी ने कहा, “तुम ठीक हो?” हमने कहा, “हाँ, ठीक हैं।” फिर सुबह हो गई। तब हमारे सपने में मम्मी रोज़ आने लगीं। अब नहीं आतीं तो हमें उनकी याद आती है और हम सोचते हैं कि काश हमारी भी मम्मी होतीं।

चित्र: ज़ोया, दूसरी, सलाम बालक ट्रस्ट, दिल्ली

जंगल की आग

पूनिया बारस्कर व राशिका कलमे
पाँचवीं व छठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला
ग्राम चाटुआ, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

हमारे गाँव के सामने का जंगल जल रहा है। मुझे बुरा लग रहा है क्योंकि पेड़-पौधे जल रहे हैं। पक्षियों के घोंसले भी जल रहे होंगे। छोटे-छोटे जानवर भाग रहे होंगे। और कुछ जानवर शायद जल भी गए होंगे। जंगल से मिलने वाली लकड़ी भी जल गई होगी। जानवर को चारा खाने के लिए नहीं मिलेगा अब। यह सब देखकर मुझे बहुत बुरा लग रहा है क्योंकि उन्हें भी बहुत दर्द हो रहा होगा। जंगल को नहीं जलाना चाहिए। जंगल जलने पर धुआँ निकलता है जिससे पेड़ में रहने वाले पक्षी का आँसू भी निकलता होगा।

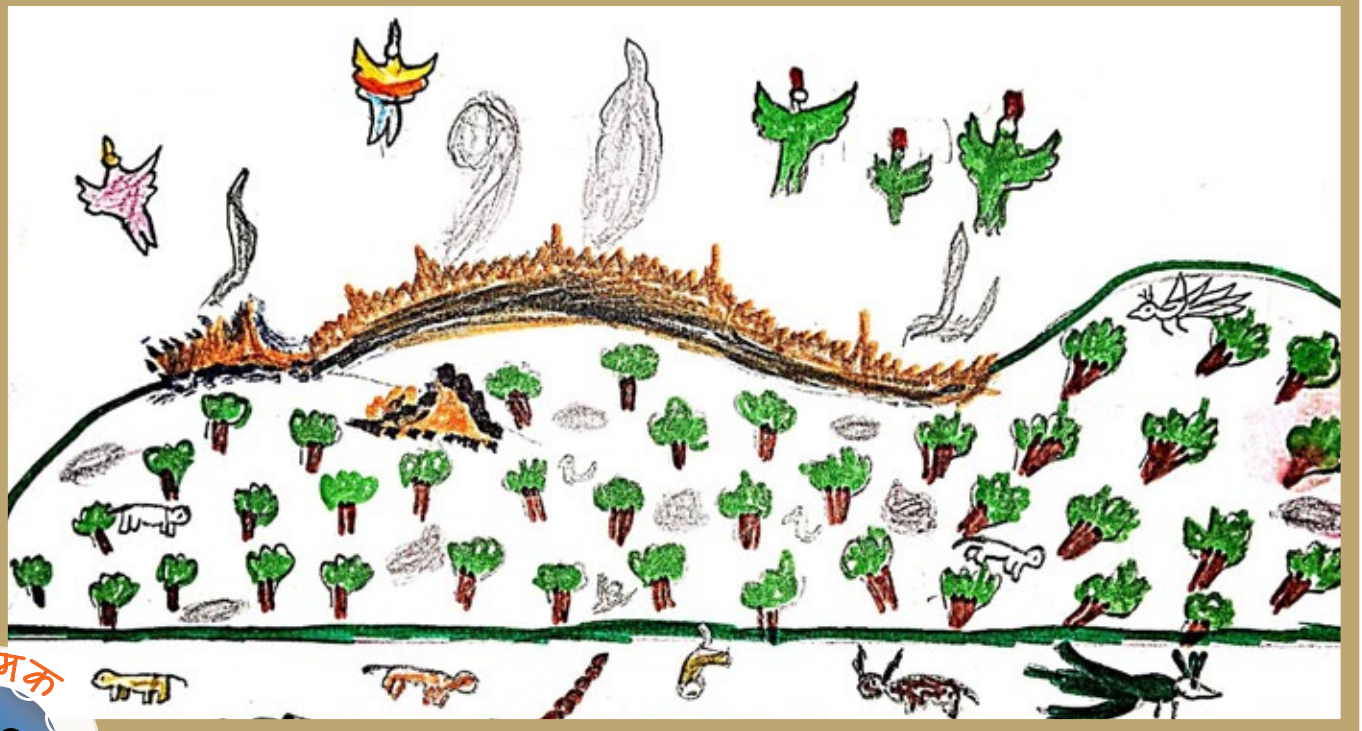

चित्र: खुशी बारस्कर, आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला ग्राम चाटुआ, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

चित्र: विरजित पवार, दूसरी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

वहम सच में असली लगता है

अनिरुद्ध गोसाईं
छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

एक बार मैं बाज़ार गया। वहाँ से घर लौटने में देर हो गई और गाड़ी भी नहीं मिली, तो मैंने सोचा मैं दौड़कर जल्दी घर पहुँच जाऊँगा। मैं दौड़ने लगा। तभी एक परछाईं मुझे दिखी और मैं डर गया। मुझे वहाँ एक घर दिखा। मैं उसमें गया। जो लोग वहाँ थे वो मुझसे पूछने लगे, "तुम कौन हो? और यहाँ क्या कर रहे हो?" मैंने उन्हें अपनी सारी कहानी बताई और उन्होंने मेरे घर पर फोन किया और कहा, "ये आज घर नहीं आ पाएगा। आज हमारे घर रहेगा।" फिर मैं वहीं सो गया। सुबह मैंने उसी जगह पर देखा जहाँ मुझे परछाई दिखी थी। लेकिन वह मेरा वहम था क्योंकि वह तो एक पेड़ था।

पापा की दिनचर्या

नवीन कुमार बेक
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय मानापारा
सरगुजा, छत्तीसगढ़

मेरे पापा की दिनचर्या में सबसे ज़रूरी बात है समय पर उठना और सभी काम करना। मेरे पापा के दिन की शुरुआत काँच के गिलास में लाल चाय से होती। चाय पीकर वे अपने आप को फुर्तीला समझते हैं और अपना काम करना शुरू करते हैं। सुबह घर के काम के साथ खेत का काम भी करते हैं। बरसात के दिनों में धान, मक्का, खीरा, दाल और मूँगफली उगाते हैं। घर का काम करने के बाद नाश्ता करके अपना दोपहर का भोजन टिफिन में रखकर वे स्कूल की ओर चल पड़ते हैं। दिन भर काम करने जब वे घर आते हैं तो अपने साथ बच्चों के खाने की चीज़ें लाते हैं। खाने की चीज़ें देखकर और पापा को देखकर बच्चे खुशी से उछल पड़ते हैं और मज़े से खाने में भिड़ जाते हैं। और तो और कम व ज़्यादा के चक्कर में घमासान लड़ाई भी हो जाती है।

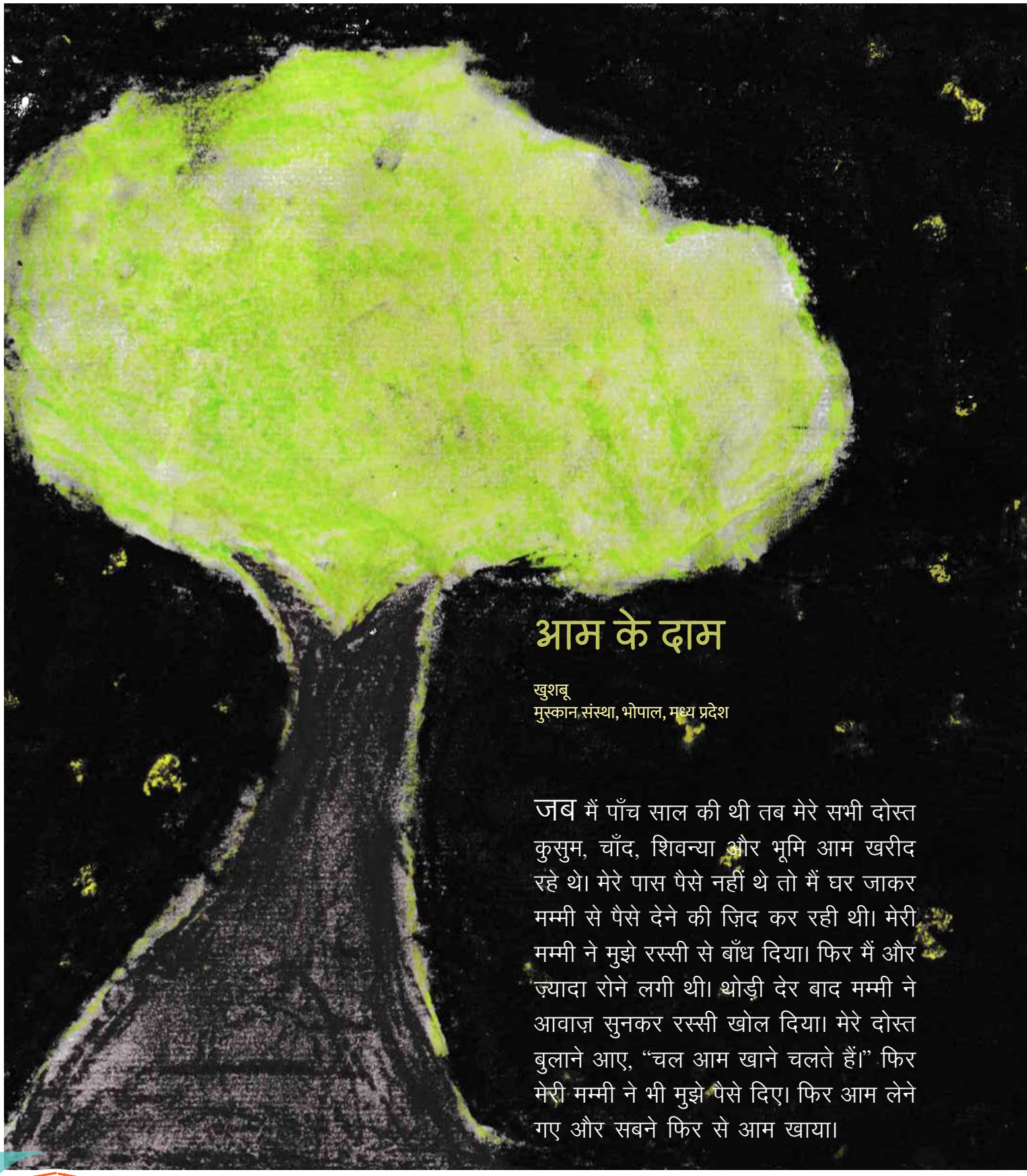

आम के दाम

खुशबू
मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

जब मैं पाँच साल की थी तब मेरे सभी दोस्त कुसुम, चाँद, शिवन्या और भूमि आम खरीद रहे थे। मेरे पास पैसे नहीं थे तो मैं घर जाकर मम्मी से पैसे देने की ज़िद कर रही थी। मेरी मम्मी ने मुझे रस्सी से बाँध दिया। फिर मैं और ज़्यादा रोने लगी थी। थोड़ी देर बाद मम्मी ने आवाज़ सुनकर रस्सी खोल दिया। मेरे दोस्त बुलाने आए, "चल आम खाने चलते हैं।" फिर मेरी मम्मी ने भी मुझे पैसे दिए। फिर आम लेने गए और सबने फिर से आम खाया।

चित्र: सानिया प्रवीण, पाँचवीं, परिवर्तन सेंटर, ग्राम नरेन्द्रपुर, सिवान, बिहार

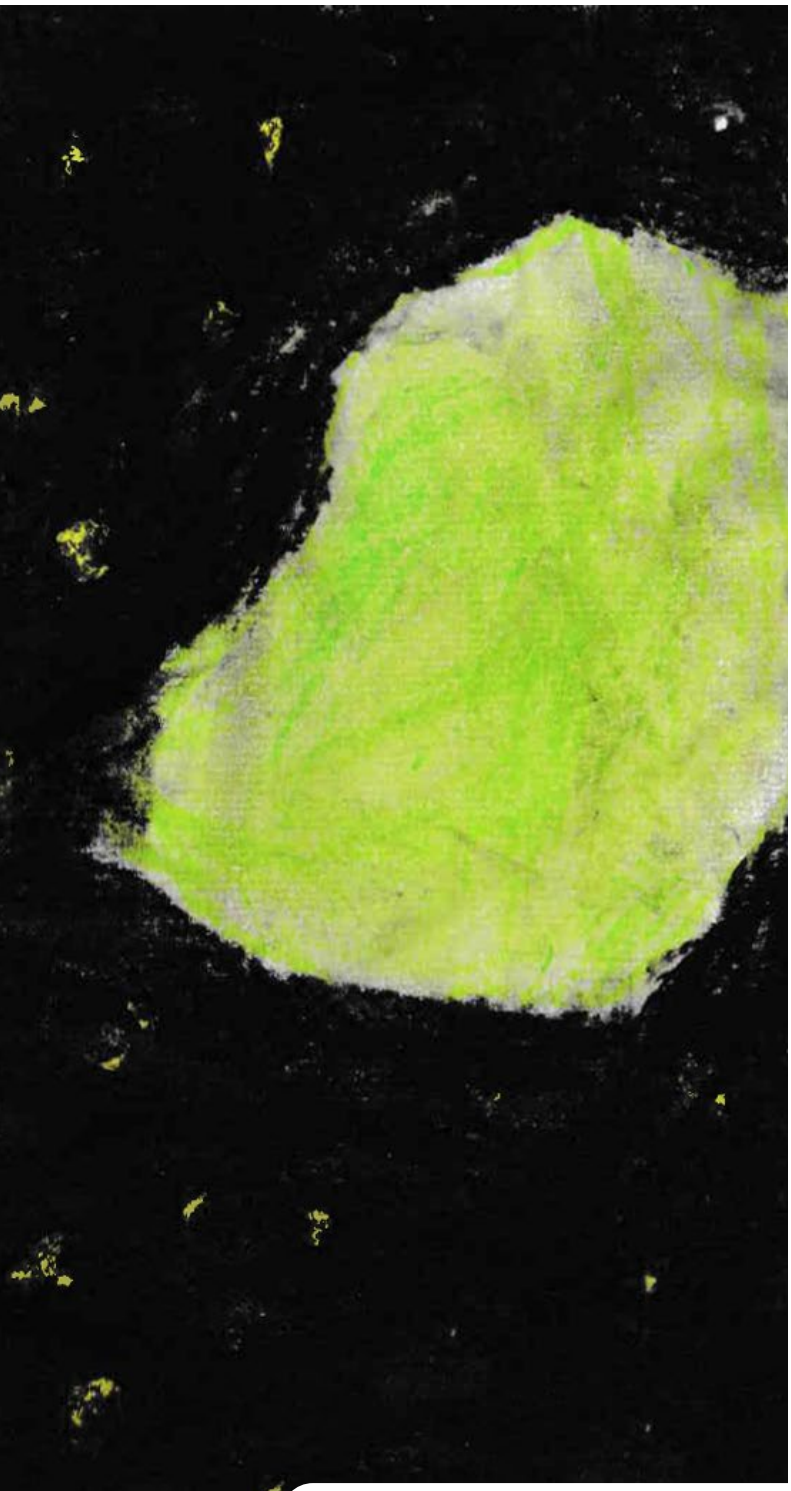

मेरी प्यारी सुरभि

रक्षा
ग्यारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
स्यांजी, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

मेरी गाय का नाम सुरभि था। वह लाल रंग की थी। वह मुझे बहुत अच्छी लगती थी। वह मुझे मारती भी नहीं थी। वह मेरे हाथ से चारा भी खाती थी। मैं उसे बहुत प्यार करती थी। जब मैं स्कूल से घर आती तो वह मुझे प्यार भरी आँखों से देखती। जब उसकी बछड़ी हुई तो मैं बहुत खुश हुई। मैंने उसका नाम पिंकी रखा। जब मैं उसका नाम पुकारती तो वह दौड़कर मेरे पास आ जाती। मैं उसे बहुत प्यार करती थी।

एक दिन जब मैं स्कूल से लौटी तो मैंने देखा कि पिंकी घर में नहीं है। मैंने उसे हर जगह ढूँढा। पर वह कहीं नहीं मिली। मैंने मम्मी से पूछा कि पिंकी कहाँ है तो मम्मी ने कहा कि धूप के लिए उसे खेत में बाँधा है। मैंने उसे देखा तो गले से लगा लिया। मैंने उसे दूध पिलाया और घर के आँगन में ले आई। मेरे दोनों छोटे भाई उसके साथ खेलने लगे।

जब वह सुबह दुहने के लिए आवाज़ डालती तो अम्मा की नींद खराब हो जाती। मेरी अम्मा को गुस्सा आता था। आज जब मैं स्कूल से घर लौटी तो मैंने देखा कि मेरी बछड़ी और गाय घर पर नहीं हैं। मैंने अम्मा और मम्मी से पूछा तो उन्होंने बताया कि उसे बेच दिया। मुझे बहुत गुस्सा आया। मैं बहुत रोई भी। पर अब मैं कुछ नहीं कर सकती थी। लेकिन सुरभि और उसकी बछड़ी मुझे हमेशा याद आते रहेंगे।

माथापच्ची जवाब

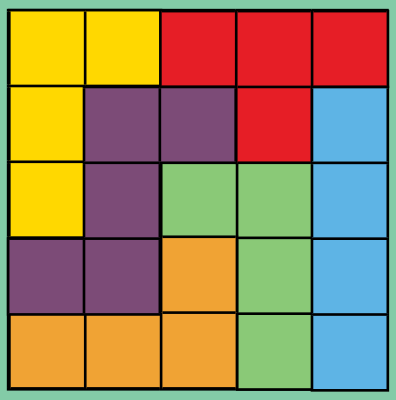

1.

2.

	मिठाई	मकान नम्बर	तर्क
अमन	मालपुआ	15	कथन 2 व 7 के अनुसार।
बेला	कलाकन्द	13	कथन 2, 4, 5 व 6 के अनुसार।
चारू	रबड़ी	14	कथन 1, 3, 7 व 6 के अनुसार।
डेविड	चमचम	11	कथन 1, 3, 4, 5 व 7 के अनुसार।
इरा	जलेबी	12	

3. कुल 117 क्रेयॉन्स इस्तेमाल हुए और हरेक समूह ने 9 क्रेयॉन्स इस्तेमाल किए। इसलिए समूहों की संख्या हुई 117 ÷9 = 13। चूँकि एक समूह में 3 बच्चे थे। इसलिए बच्चों की कुल संख्या हुई 13 x 3 =39

4. 9 ÷ 9 + 99 = 100

5. **भूल** से **भूल** हो गई हो तो उसे **भूल** जाना। याद रखना कि **भूल** को **भूल** जाना है, **भूल** करने वाले को नहीं।

6.

ता	ग	लू	पु	हों	मु	फे	म	ज
सि	र	ब	घु	पी	ठ	ल	फ	ब
का	द	पे	ट	गा	बा	ना	भि	ड़ा
म	न	ब	ना	क	ल	ल	खू	ग
खो	प	ड़ी	पा	म	ला	कि	ड	न
जी	ढ़ाँ	आँ	पै	र	प	स	ली	म
ए	ड़ी	त	ट	ख	कि	उँ	वा	स्ति
आ	मा	श	य	ड	ड	ग	दि	ष्क
ब	था	पिं	को	ह	नी	ली	व	र

7.

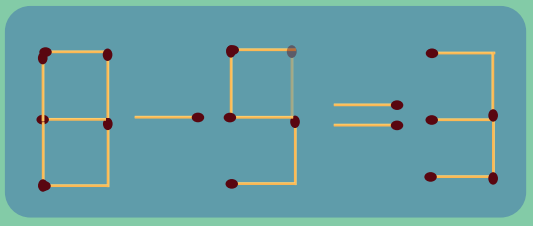

8. B वाला, ध्यान-से देखो इस स्पाइरल का अन्दरूनी हिस्सा बाकी की अपेक्षा कम घुमा हुआ है।

9.

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

सुडोकू-86 का जवाब

5	8	9	7	1	4	6	2	3
7	1	6	2	9	3	4	8	5
3	2	4	8	5	6	9	1	7
9	5	3	1	2	8	7	4	6
6	7	1	3	4	5	8	9	2
2	4	8	6	7	9	3	5	1
1	9	5	4	6	7	2	3	8
8	6	2	9	3	1	5	7	4
4	3	7	5	8	2	1	6	9

तुम भी जानो

जब पृथ्वी 9 दिन लगातार हिली

2023 में एक बहुत ही अजीबोगरीब घटना घटी। सितम्बर में नौ दिनों तक पूरी पृथ्वी कम्पन करती रही। 16 सितम्बर 2023 को 1,200 मीटर ऊँची एक पर्वत चोटी ग्रीनलैंड के सुदूर डिक्सन फ्योर्ड (हिमनदी द्वारा बनी गहरी, सँकरी घाटी) में ढह गई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पर्वत के नीचे पिघलती हुई हिमनदी अब चट्टान को थामने में सक्षम नहीं थी। इससे 200 मीटर ऊँची एक विशाल तरंग उठी। पहली तरंग के बाद घुमावदार फ्योर्ड में पानी के आगे-पीछे होने से एक सप्ताह से अधिक समय तक पृथ्वी के भीतर भूकम्पीय तरंगें उठती रहीं। हाल ही में पता चला है कि इसका कारण जलवायु परिवर्तन की वजह से बढ़ते तापमान हैं।

5 साल बाद भी बच्चों पर लॉकडाउन का असर

मार्च 2020 में, दुनिया भर के स्कूल अचानक बन्द होने लगे। इसका असर दुनिया भर के 2.2 अरब बच्चों और युवाओं के जीवन पर पड़ा। इस असर को पूरी तरह समझने की कोशिशें अभी भी जारी हैं। उस समय परिवार के सभी लोग घर पर ही फँसे हुए थे। और ज़रूरत पड़ने पर केवल थोड़े समय के लिए ही बाहर निकलते थे। स्कूल जाने की उम्र के बच्चों को उनके माता-पिता पढ़ाते थे या वे स्क्रीन के माध्यम से सीखते थे या फिर उनकी पढ़ाई छूट गई थी। कहीं स्कूल कुछ महीनों के लिए बन्द रहे तो कहीं साल-डेढ़ साल के लिए। इसका असर बच्चों के सीखने और सामाजिक व्यवहार पर भी पड़ा जो कई बच्चों में आज भी दिख रहा है। इससे कैसे निपटा जाए, यह एक बड़ी चुनौती है।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

हाथी मेरे साथी तू बगीचा है या बाड़ी है
चूहे कहते हैं — ये चलती हुई पहाड़ी है।
ये चलती हुई पहाड़ी है।

चूहे तेरी पीठ पे फुटबॉल खेलते
चींटे तेरे सिर पे वॉलीबॉल खेलते।
खरगोश तेरी सूँड पे आ-आ के फिसलते
शेर-भालू पेट के नीचे से निकलते।

तू पुल है तेरे नीचे से
निकली घोड़ा गाड़ी है।
चूहे कहते हैं — ये चलती हुई पहाड़ी है।

दिन-रात लटके रहते तेरी पूँछ पे लंगूर
मच्छर करें आँखों में मटरगश्तियाँ भरपूर
कान हैं तेरे कि किसी शहर की गलियाँ
पचड़े में पड़ गई हैं इन्हें देख तितलियाँ।

कभी-कभी तू लगे इधर का
सबसे बड़ा कबाड़ी है।
चूहे कहते हैं — ये चलती हुई पहाड़ी है।

चलती हुई पहाड़ी है

प्रभात

चित्रः कनक शशि

प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन